सम्पादक
डॉ. हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु. गुफ़रान नदवी
मु. हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
पो0 बॉ0 नं0 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522–2740406
: 0522–2741221
E-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु. 12/-
वार्षिक	रु. 120/-
विशेष वार्षिक	रु. 500/-
विदेश में वार्षिक	रु. 30 यूएस डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें

"सच्चा राही"

पता

सेक्रेटरी, मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
नदवतुल उलमा, लखनऊ, 226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

Visoin Computers- 9838644687

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

मार्च, 2009 | वर्ष 8 | अंक 1

अख़लाक़े नबवी

(सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)

सीरते नबवी का मुतालआ़ (अध्ययन) करने वाले जानते हैं कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) किस अन्दाज़ से मक्के में दाख़िल हुए, जहां उनके अक्सर दुशमन मौजूद थे हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने सब को मुआ़फ़ कर दिया, एक सहाबी के मुंह से तबई तौर पर जुम्ला निकला कि आज इन्तिक़ाम का दिन है। आप ने एअ़लान फ़रमाया कि आज रह़म का दिन है, और उनके हाथ से अ़लम ले लिया।

(मौलाना वाज़ेह़ रशीद नदवी)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

अल्लाह का शुक्र	सम्पादकीय	3
कुर्आन की शिक्षा	मौ0 मु0 मंजूर नोमानी	5
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	7
कारवाने ज़िन्दगी	मौ0 सै0 अबुल हसन अली हसनी	10
तुलसी दल चूरण	डा0 अजय शर्मा	12
पड़ोसी के हुकूक	अल्लामा सैयद सुलैमान नदवी रह0	13
मुशरिक क़ौमों का शिर्क	मौ0 मुजीबुल्लाह नदवी	15
साम्राज्यवाद और पूंजीवाद	हनीफा बेगम	18
जग नायक	मौ0 मु0 राबे हसनी नदवी	22
हम कैसे पढ़ायें	डॉ0 सलामतुल्लाह	20
गीदड़ की सौ साल की जिन्दगी से शेर की	नजमुस्साकिब	23
हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण तथा अर्थ	इदारा	25
हिन्दा बिन्त उत्बा	तालिब हाशिमी	26
दाई हलीमा के घर बरकत	मौ0 मु0 राबे हसनी नदवी	28
भारत का संक्षिप्त इतिहास	इदारा	30
आप के प्रश्नों के उत्तर	इदारा	34
अंध विश्वास और योग के झांसे	प्रभू सोहाया	36
न्याय पालिका लाचार	गृहीत	37
रिशवत खोरी की खूबियां	नुसरत जहीर	38
अतंर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ	40

अल्लाह का शुक्र

-डा. हाफिज़ हारून रशीद सिद्दीकी

अल्लाह का शुक्र है कि उस ने "सच्चा राही" द्वारा ख़िदमत के सात साल पूरे कर लेने की तौफ़ीक़ दी। इस सिल्सिले की सभी कोताहियां मेरी नज़र में हैं और सब के लिये मैं अपने पाठकों से क्षमा चाहता हूँ। अल्लाह का शुक्र है कि इन सात सालों में हर परचा अपने वक़्त पर निकला कभी लेट नहीं हुआ सिवाए जनवरी 2009 के परचे के कि एक लम्बे सफर के सबब इस मं ताख़ीर हुई।

जहाँ तक इस के मज़ामीन (विषयों) का तअ़ल्लुक़ है तो हम ने अच्छे से अच्छे मजा़मीन छापने की कोशिश की जिस के लिये हम अपने लेखकों तथा अनुवादकों के शुक्र गुज़ार हैं। हम बराबर एअ़लान करते रहे हैं कि हमारे पाठक "सच्चा राही" के बारे में अपनी राय लिखें और परामर्श दें, इस विषय में हमारे पाठक हमेशा दिल बढ़ाते रहे हें साथ ही कुछ पाठक ज़बान के सख़्त होने की शिकायत करते रहे हैं। इस सिल्सिले में भी हम अपने लेखकों से अनुरोध (दर्ख्वास्त) करते रहे हैं कि हमारे लेखक सरल लिखें, साथ ही हमने दूसरी हिन्दी पत्रिकाओं की भाषा की "सच्चा राही" की भाषा से तूलना की तो सच्चा राही की भाषा को सरल पाया।

वास्तविता यह है कि सच्चा राही पढ़ने वालों की अक्सरीयत इस्लामी सिकाफत से वाबस्ता है साथ ही उनकी बोल चाल की जुबान उर्दू है, इस लिये उन को "सृष्टि, सृष्टा, विधाता, शान्ति, अत्याचार, कुकर्म, दृष्टि, आरंभ, गद्य, पद्य जैसे सरल शब्द भी कठिन लगते हैं। फिर भी हम मानते है कि कुछ लेखों में कूछ कठिन शब्द जरूर आ जाते हैं जिस के लिये बराबर कोशिश करते हैं कि ज़ियादा सख़्त अल्फ़ाज़ न आने पाएं।

एक शिकायत बराबर यह रहती है कि छपाई में ग़लतियां रह जाती हैं, हम मानते है कि छपाई में ग़लतियां रह जाती हैं जो कभी प्रूफ़ रीडर से तो कभी कम्पाज़ीटर की चूक से रह जाती हैं कोशिश बराबर यही रहती है कि ग़लतियां ना रहें, फिर भी हम अपनी कोताहियों पर अपने पाठकों से क्षमा चाहतें हैं।

सच्चा राही अब से सात वर्ष पहले जारी हुआ था तब से अब तक ख़ासी मंहगाई बढ़ी, लोगों की तन्ख़्वाहें बढ़ी, मज़दूरियां बढ़ीं, आटा, दाल, चावल के दाम बढ़े लेकिन सच्चा राही का सालाना चन्दा वही रहा। कई हमदर्दों ने बार बार तवुज्जुह दिलाई कि चन्दा बढ़ा दिया जाए। हम ने जाइज़ा लिया तो मअ़लूम हुआ कि हम ज़ियादा घाटे में तो नहीं, लेकिन अ़मले की तन्ख़्वाहों में कमी पड़ रही है इस लिये फ़ैसला किया गया कि मार्च से "सच्चा राही" का वार्षिक चन्दा 120 रुपया तथा एक पर्चे का मूल्य 12 रुपया कर दिया जाए इस विषय में हम अपने पाठकों से उन का सहयोग इस प्रकार चाहते हैं कि वह इस बढ़े मूल्य को सहर्ष सहन कर लें और जिस ह़द तक सम्भव हो इस के पढ़ने वाले बढ़ाने में सहायता दें।

हमारा यह मार्च का अंक आठवें वर्ष का पहला अंक है जो रबीउ़लअव्वल के मुबारक महीने से आरंभ हो रहा है इसी महीने में जगनायक, जग करूणा ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) का जन्म हुआ था। जन्म तिथि में मत भेद है कोई 8 कोई 9 तो कोई 12 रबीउ़लअव्वल मानता है, परन्तु प्रसिद्ध तिथि 12 ही मानी गई है अलबत्ता दिन सोमवार पर सब सह़मत हैं।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) अल्लाह के अन्तिम नबी हैं, आप के पश्चात अब कोई नबी न आएगा अल्लाह ने आप को

सर्वश्रेष्ठ नबी बनाया, अपनी सृष्टि में आप को सब से ऊंचा बनाया, आप को अपना प्रयतम बनाया, आप पर अपनी वाणी (कुर्आन) उतारा, आप को अन्तिम विधान दिया जो समस्त जगत के मानवों तथा जिन्नों के लिये है और यह विधान क़ियामत तक के लिये है। अब संसार का कोई व्यक्ति आप को नबी और रसूल माने बिना और आप का अनुकरण किये बिना आख़िरत (परलोक) में नजात (मोक्ष) नहीं पा सकता। आप ने अल्लाह की तरफ़ से बताया कि यह सौ, पचास वर्ष का जीवन बीतते देर न लगेगी फिर सदैव का जीवन आरंभ होगा उस जीवन में या जन्नत का इनआ़म है या जहन्नम की सज़ा। जो जहन्नम से बचा कर जन्नत में दाख़िल किया गया वही सफल रहा, मगर जहन्नम से वही बचेगा जिस ने अपने जमाने के नबी व रसूल को माना और उन का अनुकरण किया और आप ने बताया कि अब क़ियामत तक मुझ पर ईमान लाने वाला और मेरा अनुकरण (परैवी) करने वाला ही नजात (मोक्ष) पा सकेगा। ऐसे महान व्यक्ति का जन्म तिथि बहुत ही मुबारक है अत्यंत शुभ है।

इस महीने इस की 9 तारिख़ या 12 तारिख़ और दोशंबा दिन याद रखना, उस का रिकार्ड करना हमारे लिये जरूरी है और इस का एहतिमाम शुरूअ़ से किया गया सीरत की किताबों में उसे महफ़ूज़ किया गया लेकिन आज कल जो इस महीने और तारीख़ में जश्न मनाने का चलन पड़ गया है यह दीन में नई चीज़ है।

लोग कहते हैं कि आज सभी बड़े लोग अपने जन्म दिन मनाते हैं, मुलायम सिंह अपना जन्म दिन मनाएं, माया वती अपना जन्म दिन मनाएं जिस में लाखों खर्च हों तो जो मख़्लूक़ में सब से बड़ा है उस का जन्म दिन क्यों न मनाया जाए। यहाँ ज़रा सोच का फ़र्क़ है, जब हम यह मानते हैं कि आख़िरत की सदैव वाली ज़िन्दगी में अब नजात उसी को मिलेगी जो आख़िरी नबी पर ईमान लाकर उन का इत्तिबाअ़ करेगा तो हम देखते हैं कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कभी भी अपना जन्म दिन न मनाया, न मनाया न मनाने का आदेश दिया। फिर आप के पीछे आप के ख़ुलफाए राशिदीन ने भी आप का जन्म दिन न मनाया न आप के नवासे हज़रत हसन और हुसैन ही ने मनाया आगे देखें तो हज़रत इमाम अबू हनीफा, हज़रत इमाम मालिक, हज़रत इमाम शाफई हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल आदि ने भी आप का जन्म दिन न मनया इस प्रकार सोचें तो साफ़ लगेगा कि यह दीन में नई बात है।

हाँ यह बात ज़रूर है कि सऊ़दिया वग़ैरह में किसी लीडर का जन्म दिन नहीं मनाया जाता इस लिये वहां के अ़वाम में हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के जन्म दिन मनाने का खयाल नहीं पैदा होता लेकिन यहां तो आए दिन लीडरों ही का नहीं देवी देवताओं का जन्म दिन भी धूम धाम से मनाया जाता है उसे देख कर अवाम मुसलमानों के दिल में भी यह जज़बा उभरता है कि हम भी अपने बड़ों की पैदाइश का दिन मनाते,इस तरह वह बारहवीं ग्यारहवीं की तक़रीब मनाने लगे, बेशक इन्सान फकंशन पसन्द है, उस को किसी बहाने धूम धाम चाहिये इस का बदल जश्ने विलादत के बजाए सीरत के जल्से हो सकते हैं। किताब व सुन्नत के मुसाबक़े हो सकते हैं, तबलीग़ी प्रोग्राम हो सकते हैं तलबा के तकरीरी मुकाबले हो सकते, हैं, महल्लों और गांवों के दौरे करके अपने भाईयों से मुलाक़ातें कर के उनके इक्तिसादी तअ़लीमी व दीनी हालात का जायज़ा लिया जा सकता है फिर उन की मदद का मुनासिब इन्तिज़ाम किया जा सकता है इस से कौन इन्कार कर सकता है कि ज़ायद रौशनी और क़ुमक़ुमों का ख़र्च अगर ग़रीब बच्चों की तअ़लीम पर किया जाए तो ज़ियादा सवाब मिले। अल्लाह हम सब को अपनी पसन्दीदा राह पर चलाए, अपने महबूब नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की महब्बत और पैरवी नसीब फ़रमाए।

❑❑

कुरआन की शिक्षा

– मौलाना मु. मन्जूर नोमानी

अल्लाह की राह में खर्च करना:–

तर्जमा :– जो लोग राहे–खुदा में अपना माल ख़र्च करते हैं, उन (के उस माल) की मिसाल उस दाने की सी है, जिस से सात बालियाँ उगीं, उन में से हर बाली (रवोशा) में सौ दाने हों; और अल्लाह जिस के लिये चाहे (उससे और ज़ियादा भी) बढ़ाता है। और अल्लाह बड़ी वुस्अ़त वाला और सब कुछ जानने वाला है।

(अलबकरह : 261)

खुदा के रास्ते में खर्च करने की तरगीब के लिये एक बहुत ही प्रभावशाली अन्दाज़ कुरआने–मजीद में यह भी प्रयोग किया गया है कि इस मद में खर्च करने को अल्लाह तआ़ला को क़र्ज़ (ऋण) देने से ताबीर किया गया है। सूरए–मुज्ज़म्मिल में इर्शाद हुआ है :–

तर्जमा :– और अल्लाह को अच्छा कर्ज दो (यानी चीज़ भी अच्छी हो और निय्यत भी अच्छी हो)

(मुज्ज़म्मिल : 20)

और इस से भी ज़ियादा आकर्षक अन्दाज़ में सूरए–बक्रह् में इर्शाद हुआ है :–

तर्जमा :– कौन वह बन्दा है जो अल्लाह का अच्छा कर्ज दे फिर अल्लाह (इसके बदले में) उस का कई गुना बढ़ा कर दे। (अलबकरह : 245)

इसी तरह सूरए – हदीद में फर्माया गया है :–

तर्जमा :– कौन ऐसा बन्दा है जो अल्लाह को अच्छा कर्ज़ दे, फिर अल्लाह उस को उस के वास्ते बढ़ा दे और उस के वास्ते करीमाना अज्र है। (हदीद : 11)

और सूरए – तग़ाबुन में इर्शाद हुआ है :–

तर्जमा :– अगर तुम अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ा दोगे तो अल्लाह उस को तुम्हारे लिये खूब बढ़ायेगा और तुम्हें बख्श देगा, और अल्लाह बड़ा कद्रदान और हिल्म वाला है।

(तग़ाबुन : 17)

इस नेकी की तर्गीब (प्रलोभन) के लिये यह "कर्ज़े–हस्ना (अच्छा क़र्ज़) देने की ताबीर, जाहिर है कि सिर्फ बन्दा नवाजी है, वरना अल्लाह तआ़ला तो "ग़नियुन् अ़निल् आलमीन" है। उस की पाक जात कर्ज़ा लेने–देने और इस तरह के हर व्यवहार व कारोबार से बहुत ऊँची है।

इस सिल्सिले मे कुर्आने–पाक की एक हिदायत और तालीम यह भी है कि अल्लाह की राह में उस के बन्दों पर अच्छी, पंसदीदा व प्यारी चीज़ ख़र्च की जाये। ऐसा न हो कि जब कोई चीज़ अपने इस्तेमाल के काबिल न रहे और बेकीमत हो जाये तो उस को उठा कर अल्लाह की राह में दे दिया जाये। सूरए–बक्रह् के आखिर में जहाँ खुदा के रास्ते में खर्च करने की बराबर तर्ग़ीब दी गयी है, वहीं यह हिदायत भी फर्मायी गयी है।

तर्जमा :–ऐ ईमान वालो ! तुम अपनी कमाई में से और जमीन से हमारी निकाली हुयी पैदावार में से अच्छी अुम्दा चीजें (हमारी राह में) खर्च करो, और ऐसा न हो कि सोच समझ कर और जान बूझ कर रद्दी और खराब चीजें इस में से (उसके राह में) खर्च करो, और हाल यह है कि (अगर तुम्हें कोई ऐसी रद्दी चीज दे, तो) न हो तुम उस को लेने वाले इल्ला यह कि तुम उस में चश्म–पोशी से काम लो (आँख बचा लो)। (अलब्करह : 267)

और सूरए – आलि अ़िम्रान में इर्शाद हुआ है :–

तर्जमा :– हरगिज़ तुम नेकी को नहीं पा सकते जब तक तुम (राहे–खुदा में) उस में से खर्च न करो जो तुम को पसंद और प्यारा है। और तुम जो चीज भी (अच्छी या बुरी) खर्च करोगे तो यकीन रखो कि अल्लाह को इस का खूब इल्म है। (आलिइम्रान : 92)

इस सिलसिले में एक खास

हिदायत यह भी दी गयी है कि अल्लाह की राह मे उस के बन्दों पर जो कुछ खर्च किया जाये और उन की जो भी खिदमत और मदद की जाये उस का ध्येय और मक्सद बस रिजाए–इलाही होना चाहिये :–

सूरए–बक्रह् के 37 वें रूकूअ़ की वह आयत ऊपर नक्ल हो चुकी हैं, जिस में इर्शाद फर्माया गया है:–

तर्जमा :– और नहीं खर्च करते हो तुम (ऐ ईमान वालो) मगर सिर्फ रिजाए–इलाही की तलब में।

(अलबकरह : 272)

मतलब यह है कि ईमान वालो की शान यही है कि इस तरह के काम वे सिर्फ अल्लाह तआ़ला की रिजा–तलबी के इरादे हीसे करे, इस के अलावा उन की कोई गरज़ न हो। और सूरए–लैल में फर्माया गया है कि अल्लाह का जो परहेजगार बन्दा, अपना माल (उस के दूसरे बन्दों पर) सिर्फ उस की रिजा के लिये खर्च करता है और रिजाए–इलाही के सिवा इस से उस का कोई मक्सद नहीं है, तो उस को अल्लाह तआ़ला की रिजा भी हासिल हो जायेगी और दोजखके अजाब से भी वह बिल्कुल महफूज रहेगा। इर्शाद है :–

तर्जमा :– और उस दोज़ख की आग से वह परहेजगारबन्दा दूर रखा जायेगा जो (अपना माल अल्लाह के लिये उस के दूसरे बन्दों को) इस लिए देता है कि इस अमल के जरिये उस को पाकीजगी हासिल हो, और यह बात नहीं है कि उस पर किसी का एहसान हो जिस का बदला दिया जाये, बल्कि अपने आला व बरतर अल्लाह की रिजा तलबी ही के लिये देता हो–– और बिला शुबह उस का पर्वर्दगार उस से राजी हो जायेगा।

इस सिल्सिले में एक अहम हिदायत कुर्आने –मजीद में यह भी दी गयी है कि अल्लाह के लिये जिस बन्दे को कुछ दिया जाये, या उस की कुछ खिदमत और मदद की जाये तो उस पर इस का एहसान हरगिज न जताया जाये। अगर ऐसा किया गया तो इस से वह नेकी बिलकुल अकारत हो जायेगी।

सूरए –बक्रह् ही में इर्शाद हुआ है :–

तर्जमा :– ऐ ईमान वालो! अपने सदकों को एह्सान जता कर और अजीयत दे कर बरबाद न करो। (अलबकरह : 264)

यानी अगर किसी ने किसी खुदा के बन्दे को कुछ दिया और उस की कोई खिदमत और मदद की, और फिर कभी उस पर एहसान धरा, या ताने के तौर पर जिक्र करके उस बेचारे का दिल दुखाया, तो मानो अपनी की हुयी नेकी को बिल्कुल मल्यामेट व बरबाद कर दिया।

OO

अनुरोध

कृपया स्पष्ट तथा सरल लिखें। जिसे पाठक न समझें वह लेख लाभहीन है।

इस्लाम और तलवार

–अली मियाँ–

"इस्लाम के इतिहास में किसी तलवार की सूरत नज़र नहीं आती, कोई लश्कर कशी नहीं हुई, चीन में कोई लश्कर नहीं भेजा गया, इन्डोनेशिया में कोई तलवार नहीं चमकी। इस्लाम सच्चे सौदागरों और खुदा परस्त सूफियों के जरिये फैला। आज क्यों इस्लाम नहीं फैल रहा है, वजह यह है कि हमारे अन्दर कमजोरी आ गई है, हम ने अपनी पहचान खो दी है, हमारा व्यापारी दूसरे व्यपारियों से अलग नहीं, हमारा मुलाजिम दूसरे मुलाजिम से अलग नहीं, और हमारा पढ़ा लिखा इन्सान दूसरे पढ़े लिखे इन्सानों से अलग नहीं। हम को तो ऐसा मुमताज (विशिष्ट) होना चाहिये और हम में ऐसी पहचान होनी चाहिये जैसे बरसात में रात का दिया टिमटिमाता है या अन्धेरी रात में सितारे चमकते हैं।

एम. हसन अंसारी

❑❑

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तसनीम

मेहनत व मजदूरी की फजीलत

हजरत जुबैर (र0) बिन अवाम से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, कोई अपनी रस्सी लेकर पहाड़ पर जाये और लकड़ी का एक बोझ अपनी पीठ पर लाद लाये, उसको बेचे, अल्लाह उसकी वजह से बकदरे ज़रूरत दे दे तो यह उसके लिए उससे बेहतर है कि वह लोगों से माँगता फिरे ; लोगों की खुशी पर मौकूफ है दें या न दें। (बुखारी)

हजरत अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, जो लकड़ी का एक बोझ अपनी पीठ पर लाद लाये तो यह उसके लिए उससे बेहतर है कि लोगों से सवाल करे; और वह दें या न दें। (बुखारी)

बड़े–बड़े पैगम्बर अपने हाथ की कमाई से खाते थे

हजरत अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, हजरत दावूद (अ0) अपने हाथ से काम करके खाते थे। (बुखारी)

हजरत अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, हजरत जकरीया (अ0) बढ़ई का काम करते थे। (मुस्लिम)

हजरत मिकदाम (र0) बिन मअ़दी करिब से रिवायत है कि नबी (स0) ने फरमाया, किसी ने इससे बेहतर खाना कभी नहीं खाया कि आदमी अपने हाथ की मेहनत का खाये। बेशक अल्लाह के नबी दावूद (अ0) अपने हाथ से काम करके खाते थे। (बुखारी)

रशक का मौका

हजरत इब्नि मस्ऊद (र0) से रिवायत है कि नबी (स0) ने फरमाया, काबिले रशक दो ही तरह के आदमी हैं। एक वह जिसको अल्लाह तआ़ला माल दे और वह अल्लाह की राह में लुटाये; और दूसरा वह जिसको अल्लाह हिकमत दे तो वह लोगों के दर्मियान फैसला करे और सिखलाये। (बुखारी–मुस्लिम)

आदमी का अपना माल

हजरत इब्नि मस्ऊद (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, तुममें से किसको अपने माल से जियादः अपने वारिस का माल पसन्द है। लोगों ने कहा, या रसूलल्लाह! सबको अपना माल महबूब है। आपने फरमाया, आदमी का अपना माल वही है जो उसने आगे भेजा और उसके वारिस का माल वह है जो पीछे रक्खा। (बुखारी)

खजूर का टुकड़ा भी आग से बचा सकता है

हजरत अ़दी (र0) बिन हातिम से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फरमाया, (दोजख की) आग से बचो कुछ नहीं तो एक खजूर का टुकड़ा ही देकर। (बुखारी–मुस्लिम)

आपने कभी सवाल रद नही किया

हजरत जाबिर (र0) फरमाते है कि हुजूर (स0) ने कभी किसी के सवाल पर "नहीं" का लफ़्ज नही फरमाया।

खर्च करने से माल में बर्कत

हजरत अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, हर सुबह को दो फिरिश्ते उतरते हैं। एक कहता है, ऐ अल्लाह ! खर्च करनेवालों को निअ़मल्बदल अता फरमा। दूसरा कहता है, ऐ अल्लाह! बखील को तबाह और बरबाद कर। (बुखारी–मुस्लिम)

हजरत अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, अल्लाह तआ़ला फरमाता है, ऐ आदम

के बेटे ! खर्च कर, तुझ पर भी खर्च किया जायेगा। (बुखारी–मुस्लिम)

इस्लाम की बात

हजरत अब्दुल्लाह (र0) बिन उमर से रिवायत है कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि इस्लाम में कौन सी खूबी है आपने फरमाया, खाना खिलाओ और सलाम करो जिसको जानते हो और न जानते हो।

(बुखारी–मुस्लिम)

हजरत अब्दुल्लाह (र0) ही से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, चालीस खस्लतें हैं, उनमें सबसे बलन्द बकरी का अतीयः है। जो कोई इन खसलतों पर सवाब की उम्मीद और उसके वादे की तस्दीक में अमल करेगा तो अल्लाह उसको जन्नत में दाखिल करेगा। (बुखारी)

फाजिल चीज का खर्च कर देना बाअिसे बर्कत है

हजरत अबू उमामः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0) ने फरमाया, ऐ इब्नि आदम! अगर तू अपने बचे हुए माल को खर्च कर डालेगा तो यह तेरे लिए बेहतर होगा। और अगर तू उसको बचा बचा कर रक्खेगा तो यह तेरे हक में बुरा होगा। और बकदरे जरूरत रोकने पर तुझे कोई मलामत न करेगा। और खर्च की इब्तिदा उस शख्स से कर जिसका तू कफील है। और ऊँचा हाथ नीचे हाथ से बेहतर है। (मुस्लिम)

फक्र से निडर होकर सखावत

हजरत अनस (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस्लाम के बाद जिस किसी ने सवाल किया, आपने जरूर दिया। एक आदमी ने आपसे सवाल किया, आपने दो पहाड़ों के दर्मियान जितनी बकरियाँ थीं सब इनायत फरमायीं। वह अपनी कौम की तरफ पलटा और कहा ऐ कौम, मुसलमान हो जाओ। बेशक रसूलुल्लाह अलैहि व सल्लम ऐसा देते हैं कि फक्र से भी नहीं डरते। और बाज आदमी दुनिया के लिए इस्लाम लाते थे लेकिन जल्द ही इस्लाम उनको दुनिया और दुनिया की तमाम चीजों से महबूब हो जाता था।

(मुस्लिम)

हजरत उमर (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मर्तबा तकसीम किया। मैंने कहा या रसूलुल्लाह! इनसे जियादः और लोग मुस्तहक हैं। आपने फरमाया, यह लोग मुझसे सख्ती से सवाल करते हैं। अगर मैं इनको न दूँ तो मुझे बखील कहेंगे और मैं बुख्ल करनेवाला नहीं हूँ।

(मुस्लिम)

हजरत जुबैर (र0) बिन मुतअिम से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ हुनैन से वापस आ रहा था। कुछ देहाती आपसे लिपट गये और माँगने लगे। यहाँ तक कि आप मजबूर होकर एक बबूल तक आ गये और आपकी चादर अटक गयी। आप ठहर गये और फरमाया, मुझे मेरी चादर दे दो। अगर मेरे पास इन खारदार काँटों के बराबर भी चौपाये होते तो मैं तुम्हारे दर्मियान तकसीम कर देता। तो फिर मुझे बखील, झूटा और बुजदिल न पाते।

(बुखारी)

हजरत अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, सदके ने किसी का माल नहीं घटाया। जब बन्दः किसी की खता मुआफ करता है तो अल्लाह उसकी अिज्ज़त जियादः कर देता है। और जो अल्लाह के लिए तवाजो और इज्ज़ इख्तियार करता है तो अल्लाह अ़ज़ज़ व जल्ल उसको और बलन्द करता है। (मुस्लिम)

सदका माल को कम नहीं करता

हजरत उमर (र0) बिन सअ़द (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते थे, तीन बातों पर मैं कसम खाता और तुमको बताता हूँ, उसको याद रक्खो। (1) सदका करने से किसी का माल नहीं घटता। (2) मजलूम बन्दः जब सब्र करता है तो अल्लाह उसकी अिज्जत जियादः करता है। (3) और जो बन्दः दस्ते सवाल दराज करता है तो अल्लाह तआ़ला उसपर फक्र का दरवाजा खोल देता है। और याद रक्खो दुनिया में चार किस्म के लोग हैं।

(1) एक वह जिसको अल्लाह ने माल भी दिया है और अिल्म भी। वह अिल्म की वजह से अपने

परवरदिगार से डरता हैं। करावतदारों के साथ सुलूक करता है। अल्लाह का हक जानता है। वह मर्तबे में सबसे अफजल है।

(2) दूसरा वह आदमी जिसको अल्लाह ने अिल्म दिया लेकिन माल नहीं दिया। वह सच्ची नीयत के साथ उसकी ख्वाहिश रखता है। और कहता है, ऐ काश! आगर मुझे भी फुलाँ की तरह माल मिलता तो मैं भी उसी की तरह दाद व दिहिश से काम लेता। और अज्र का मुस्तहक होता। पस दोनो का अज्र बराबर है।

(3) तीसरा वह जिसको अल्लाह ने माल दिया लेकिन अिल्म से महरूम रक्खा वह जिहालत से माल को बेजा तरीके पर खर्च करता है, अल्लाह से नहीं डरता। यह नहीं जानता कि अल्लाह का क्या हक़ है, बन्दों का क्या हक है। वह बहुत बुरा है।

(4) चौथा वह है जो माल और अिल्म दोनों से महरूम है। वह कहता है काश जैसे फुलाँ को दौलत मिली मुझको भी मिलती तो मैं भी उस दोलतमन्द की तरह खर्च करता और ऐश व अिश्रत में जिन्दगी बसर करता। पस यह दोनों गुनाह में बराबर हुए। (तिर्मिजी)

जो अल्लाह के रास्ते में खर्च हो जाये वह महफूज है

हजरत आयशः (र0) से रिवायत है कि मैंने एक बकरी जिबह की। रसूलुल्लाह सल्ललाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, कुछ बाकी है? मैंने अर्ज किया एक बाजू बाकी है। आपने फरमाया, इस बाजू के सिवा सब बाकी है। (तिर्मिजी)

खुदा का यकसाँ सुलूक

हजरत असमा (र0) बिन्त अबू बक्र सिद्दीक (र0) से रिवायत है कि मुझसे रसूलुल्लाह सल्ललाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया खर्च कर, गिना–गिनकर न रख, वरना तुझे भी खुदा गिन–गिनकर देगा। और बाँध–बाँधकर न रख, वरना तुम पर भी रिज्क बाँध दिया जायेगा।

(बुखारी–मुस्लिम)

❑❑

मुस्लिम का फर्ज

था हुक्म ये मुस्लिम
तू भाई की मदद कर
मज़्लूम हो ज़ालिम हो
दोनों की मदद कर
क्यों जुल्म से रक्ता नहीं
जालिम से कह दे
जालिम का हाथ रोक कर
जालिम की मदद कर
ऐ रहबरे आलम
मुस्लिम तू कहां है
भूला जो सबक तू है
बिगड़ा ये जहां है

❑❑

एलाने मिलकियत व अन्य विवरण

फारम–4–नियम–8

प्रकाशन का स्थान	–	मजलिसे सहाफत व नशरियात, नदवतुल उलमा, बादशाहबाग लखनऊ
प्रकाशन अवधि	–	मासिक
सम्पादक	–	डा0 हारून रशीद सिद्दीकी
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	अहाता दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ
मुद्रक एवं प्रकाशक	–	अतहर हुसैन
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	21, अदनान पल्ली निकट हिरा पब्लिक स्कूल, रिंग रोड, दुबग्गा, डाक घर, काकोरी, लखनऊ
मालिक का नाम	–	मजलिसे सहाफत व नशरियात दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ

मैं अतहर हुसैन प्रमाणित करता हूँ कि उपरोक्त विवरण मेरे विश्वास व जानकारी में सही है।

किस्त : 12

कारवाने ज़िन्दगी

आत्म कथा

मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी

अरबी तालीम की शुरूआत

अरबी तालीम की शुरूआत गालिबन 1924 के आखिरी हिस्से में हुई। हमारे बुजुर्ग चचा सैयद खलीलुद्दीन साहब इलाज की गरज से बाजार झाऊलाल में एक मकान किराये पर लिये थे, वहीं ठहरे थे। स्नेह वश उन्होंने मुझे अपने साथ रख लिया। भाई साहब ने अरब साहब से मुझे अरबी सिखाने के लिये बात कर ली उन्होंने एक दिन कापी पर माजी (भूतकाल) की गर्दान, फअल, फअ़ला, फअलू लिखकर दी और कहा कि याद करके ले आओ। इसके चन्द दिन के बाद ही उन्हों ने अपनी महबूब निसाबी किताब "अलमुतआलतुल अरबिया" शुरू करा दी। उस वक्त अरब साहब बाजार झाऊलाल की उसी गली में एक छोटे से मकान में रहते थे और लखनऊ यूनीवर्सिटी में अरबी के उस्ताद थे। मेरे एक ही सहपाठी उन के छोटे भाई हुसैन इब्न मुहम्मद थे। हम दो छात्रों की यही एक कलास थी। दो होने की वजह से हम में से हर एक को अरब साहब के ध्यान और तवज्जुह से पढ़ाई का पचास प्रतिशत हिस्सा रसदी के तौर पर मयस्सर हुआ जो विद्यार्थियों का सौभाग्य होता है। अब बड़ी कलासेज़ में पाँच दस प्रतिशत से अधिक हिस्सा किसी के हिस्से में नहीं आता। छोटा कलास होने की वजह से अरब साहब हम लोगों की रग रग से वाकिफ हो गये। वह हर एक की कमजोरी और हर एक की विशिष्टता समझते थे। अरब साहब की साहित्यिक अभिरूचि (अदबी जौक) व विशिष्टता और शैक्षिक उत्कृष्टता (तदरीसी कमाल) के बारे में मुझे इस "आप बीती" में लिखना नहीं कि "पुराने चिराग" भाग एक मे इन पर एक लेख 20–21 पेज का आ चुका है।

मेरी तालीम का सिलसिला जारी रहा। रोजाना ऐसे समय में कि अरब साहब यूनीवर्सिटी से पढ़ाकर आ चुके हों, पैदल घसियारी मण्डी से बाजार झाऊलाल जाता। और मगरिब के करीब वापस आता। बाज मर्तबा ऐसा हुआ कि मुझे आने में देर हुई तो भाई साहब जो अभी अभी पैदल मेडिकल कालेज से घसियारी मण्डी पहुँचे थे, मेरी तलाश के लिये निकल गये। मैं एक तरफ से घसियारी मण्डी पहुँचा और दूसरी तरफ से वह अरब साहब के यहाँ, जब मालूम हुआ कि मैं जा चुका हूँ, वापस आ गये। मेरी अंग्रेजी तालीम का सिलसिला तो बरा–ए–नाम, लेकिन अरबी का सिलसिला पूरी तनमयता के साथ चलता रहा। अरब साहब का अपना एक नवीन पाठयक्रम था जिस में मिस्र के पाठयक्रम की नई किताबें शामिल थीं चन्द ही दिन बाद उन्हों ने अरबी में बोलना लाजिम कर दिया। उर्दू बोलने पर दो पैसे या एक आना का जुर्माना होता था जो हम लोगों को अक्सर अदा करना पड़ा। व्याकरण में अधिक बल अभ्यास, सही पढ़ने और एराब ('जबर','जेर' और 'पेश') की वजह समझने और बताने पर था। निबन्ध लिखने का अभ्यास भी था। सबक पढ़ने का तरीका यह था कि हम लोग पूरा सबक तैयार कर के लायें और उन को सुना दें। कलैला व दम्ना में इस का खास तौर से एहतिमाम था। मेरा नुसखा बहुत ऐबदार था इसका करेकशन भी करना पड़ता था सबक भी तैयार करना पड़ता था। प्रारम्भिक व्याकरण के लिये उन्हों ने मेरे ही एक हमनाम अबुल हसन अलजरीर की छोटी सी किताब अज्ज़रीरी पढ़ाई, जिस में लगभग व्याकरण के सभी नियम सर्फ़ व

नह्व आ गये हैं जिन की व्यवहार में जरूरत पड़ती है लेकिन इस में फिक्हुन्नह्व या फल्सफतुन्नह्व बिल्कुल नहीं है। नह्व (व्याकरण) की पुरानी कताबों में से मैं ने "मीजान" "मुनशअिब" "सर्फे मीर" "नहवे मीर" "पचगंज" अपने चचा मौल्वी सैयद अजीजुर्रहमान साहब से पढ़ी जो बड़ी मेहनत और निगरानी से इन किताबों को पढ़ाते थे। अरबी में नज्म व नस्र की किताब में हिस्स–ए–नस्र (गद्यभाग) को भी जबानी याद करना और सुनाना पड़ता था। इन प्रारिम्भिक पुस्तकों के बाद अरबी भाषा की पुरानी उच्च स्तर की किताबें पढ़ने की नौबत आई जैसे "नहजुल बलागः" "मकामाते हरीरी" "दलायलुल एजाज" और "अशरः कसाइद"। अरब साहब के टीचिंग मेथड पर विस्तार से उन के परिचयात्मक लेख में लिखा जा चुका है, सिर्फ इतना ही टुकड़ा नकल किया जाता है कि :– "अपनी पसन्द व नजर को अपने छात्रों को ट्राँस्फर कर देने और उन के मन–मास्तिष्क में उतार देने की अजीब व गरीब काबिलियत, जो किताब पढ़ा रहे हों उस में जान डाल देने, फन (कला) की सही रूचि पैदा कर देने, और लेखक का हमजबान और हममजाक (एक आधर–विचार वाले) बना देने की उन में वह बेनजीर कुदरत थी जो हजारों में से कहीं किसी एक टीचर या कलाकार में होती है, यह काबिलियत खुदाई देन है।

अरबी जबान व अदब का जौके सलीम (सुरूचि) व शुद्धता फिर इस अभिरूचि व सुरूचि को ट्राँस्फर करने की जो योग्यता अरब साहब में देखी वह न सिर्फ हिन्दुस्तान (जो सदियों से अरबी की सुरूचि से अनभिज्ञ और सही शिक्षण विधि से वाँचित है) बल्कि अरब देशों के उच्च शैक्षिक हल्कों में भी कहीं कहीं शायद ही पायी जाये। "(पुराने चिराग भाग एक पेज 213)

तौफिके इलाही (ईश्वर की मदद)

अरब साहब से पढ़ने के जमाने में एक घटना घटी जो देखने में तो मामूली घटना थी लेकिन मेरे कम से कम अरबी तालीम व जबान व अदब के हुसूल में कामयाबी के सिलसिले में फैसलाकुन असर रखती थी। हुआ यह कि मेरे अंग्रेजी के उस्ताद खलीलुद्दीन साहब हंसवी ने जिनका अरब साहब बड़ा लेहाज करते थे, उन से मेरे एक ऐसे तर्जे अमल की शिकायत की जिस से उन को अपने अपमान का एहसास हुआ था। यह एहसास महज गलतफहमी (भ्रमवश) पर मबनी था कि मैंने यह कहने के बाद कि आज फुलाँ उज्र (विकशता) की वजह से मेरे लिये सबक पढ़ना मुशकिल है, दरवाजा जरा जोर से बन्द किया। अरब साहब इस से बहुत प्रभावित हुए और उन्हों ने भाई साहब से इजाजत ली कि आज वह मेरी अच्छी तरह तंबीह (चेतावनी) करेंगे। उनके स्वभाव में कुछ तेजी भी थी, इस घटना ने उन्हें भड़का दिया। उन्होंने मुझे इस पर इतना मारा जो इस जुर्म और घटना की अपेक्षा बहुत बढ़ गया। बाद में उनको इसका एहसास हुआ कि इस में कुछ बे एतदाली हो गयी, जिस के लिये मुझ से क्षमायाचना भी की। होते होते यह खबर वालिदः साहिबः को रायबरेली पहुंची। उन्होंने मुझ से दरयाफ्त किया, और कहा कि मालूम हुआ है कि अरब साहब ने तुम को बहुत मारा। अल्लाह तआला ने उस वक्त तौफीक दी, और मैंने अरब साहब की पूरी वकालत और उन की तरफ से पूरा बचाव किया, और उन को इस चेतावनी व मार में हक बजानिब करार दिया वालिदः साहिबः सन्तुष्ट हो गयीं, और मेरी तालीम का सिलसिला जारी रहा। मैं समझता हूँ कि मेरे इस सआदतमन्दाना रवैयः ने जो महज तौफीके इलाही का नतीजा था, भाविष्य में मेरे लिये अरबी जबान व अदब का जौक पैदा होने, और इस के जरियः से दीन व इल्म की खिदमत करने का फैसला करा दिया। अगर वस्तु–स्थिति इस के विपरीत होती, और मैं अपने को बरी और मजलूम करार देता, और अपने मुहसिन व मुरब्बी उस्ताद

(दीक्षा देने वाले हितैषी गुरू) को सीमाओं का उलंघन करने वाला, तो शायद मामला उल्टा होता, और मैं हमेशा के लिये उन के फैजे तालीम (शिक्षा की देन) और अरबी जबान व अदब में कामयाबी से महरूम (वंचित) कर दिया जाता।

एकलतीफा और इम्तेहान

मैं और मेरे साथी हुसैन इब्न मुहम्मद अरब एक रोज अरब साहब से पढ़ रहे थे। सबक हो रहा था कि अरब साहब ने जो यूनीवर्सिटी से अभी आये थे, चाय की फरमाइश की, घर में से आवाज आई कि शकर नहीं है। अरब साहब ने उसी वक्त एक रूपया हुसैन साहब को निकाल कर दिया कि शकर ले आओ। वह सेर भर शकर लाये जो गालिबन उस वक्त दो ढाई आने की मिलती होगी, और रेज़गारी वापस की। थोड़ी देर के बाद अरब साहब ने कहा कि बकिय: पैसे क्या हुए? उन्हों ने कहा कि भाई जान अभी मैं ने रेज़गारी दी थी, देखा तो वहां कहीं नज़र न आई अरब साहब बहुत नाराज हुए, कहा कि या तो मैं था, या अली, या तुम आखिर रेजगारी कहाँ गयी? मालूम होता है तेरी आदत खराब हो गयी। हुसैन बराबर कहते रहें कि मैं ने अभी रेजगारी वापस की थी, लेकिन उसका कहीं पता नहीं था, फिर सबक शुरू हो गया। हम लोग चले गये। बात आई गयी हो गयी।

एक दिन मैंने वही किताब जो उस दिन पढ़ रहा था, खोली किताब बड़े साइज की थी और ढीली जिल्द की थी। मैंने देखा कि सब रेजगारियाँ किताब की सीवन में एक कतार की तरह रखी हुई हैं। मालूम होता है कि हुसैन ने भूल कर या अरब साहब ने मेरी किताब पर रख दीं, जो कहीं से खुली हुई थी, हवा से पन्ना उलट गया, और रेजगारी उस में रह गई। जब इतेफाकन वह पन्ना उलटा गया तो रेजगारी मौजूद थी। मैं थोड़ी देर सोचता रहा कि क्या करूँ? डर मालूम होता था कि अरब साहब को मुझपर शुबह हो गया कि मैंने रेजगारी छुपा ली थी। इस के बाद कुछ ख्याल हुआ, और वापस कर रहा हूँ। लेकिन अल्लाह ने तौफीक और हिम्मत दी, और मैंने सारा किस्सा बयान किया और रेजगारी पेश की। यह तो मालूम नहीं कि अरब साहब को यकीन आया कि नहीं लेकिन उन्होंने रेजगारी ले ली और कुछ फरमाया नहीं। अल्लाह तआ़ला की इस तौफीक पर शुक्र करता हुँ, और जब यह घटना याद आती है तो हँसी भी आती है। (जारी)

प्रस्तुति : एम० हसन अंसारी

❑❑

दूसरों का सम्मान करो
दूसरे तुम्हारा सम्मान करेंगे।

तुलसी दल चूर्ण

"डा० अजय शर्मा"

तुलसी विश्व की धरोहर बनती जा रही है जब की भारत में 90 प्रतिशत घरों में मिलती है। विदेशों में भी तुलसी कैपसूल और तुलसी टी के नाम से चल रही है। यह प्रदेश या देश में आसानी से उपलब्ध रहती है। यह सरदी में दादी माँ का नुस्खा है। जो लाभ करता है नुकसान कुछ नहीं है।

घटक दल– तुलसी की पत्ति इस दल को तोड़ कर धो लिया जाता है। फिर सुखा कर उसको कूट लें, फिर पाउडर किसी साफ कागज में रख लें। सर्दी, जुकाम में 1/2 चम्मच चूर्ण सुबह शाम गुन गूने पानी से लेने पर बलगम नहीं बनात है। यह एण्टी आक्सीडेनट और कफ नाशक आयुर्वेद ग्रंथ में माना जाता है। यह फेफडों के हर रोग में लाभदायक है। वैसे यह शरीर के हर रोग में इस्तेमाल की जाती है। बाल सफेद हो या झडने पर तुलसी दल का पानी इस्तेमाल करे। बाल स्वस्थ होंगे।

लाइनस आईग्रेन में तुलसी की चाय पीयें। लाइनस आईग्रेन ठीक होगा। दाँत यदि दर्द कर रहे हो उस पर तुलसी चूर्ण मले लाभ होगा। यदि आप साँस रोग के मरीज हो तो सितोपलादि चूर्ण के साथ तुलसी चूर्ण दिन में चार बार लें। आँतो की सूजन हटाने में इस का अच्छा रोल है। यह चूर्ण कैंसर एड्स हैपीटाइटिस, लिवर सिरोसिस को महा औषधि है, ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करो। मंदाग्नि में गर्म जल से इसका प्रयोग करे।

❑❑

पहली किस्त

पड़ोसी के हुकूक (अधिकार)

अल्लामा सैयद सुलैमान नदवी रह0 **अनुवादः नजमुस्साकिब अब्बासी गाजीपुरी**

पड़ोसी और हमसाया वह दो आदमी हैं जो एक दूसरे के निकट रहते और बसते हैं। मानवता और उसकी संसकृति की बुनियाद पारस्परिक योगदान, सहयोग और सहकारिता पर स्थापित है। इस संसार में हर आदमी दूसरे इन्सान की सहायता का मोहताज है। अगर एक भूका है तो दूसरे पर हक है कि अपने खाने में से उसको भी खिलाए और अगर एक बिमार है तो जो तन्दरूस्त हो उसकी सेवा (तीमारदारी) करे। एक पर अगर कोई मुसीबत आए तो दूसरा उसका शरीक और हमदर्द बने और इस नैतिक व्यवस्था (अखलाकी निजाम) के साथ इन्सानों की सामूहिक जनसंख्या पारस्परिक प्रेम और हूकूक की जिम्मेदारियों की गाँठ में बंध कर एक हो जाएं। हर इन्सान बजाहिर जिस्मानी और भौतिक स्थिति से जितना एक दूसरे से अलग है, नैतिक और आध्यात्मिक हैसियत से जरूरी है कि वह उतना ही ज्यादा एक दूसरे से मिला हुवा और एक का अस्तित्व दूसरे के अस्तित्व से उतना ही जुड़ा हो। इसीलिए हर धर्म ने उन दोनों आदमियों पर जो एक दूसरे के निकट आबाद हों, आपस में प्रेम और सहायता की जिम्मेदारी रखी है कि वही समय पर औरों से पहले एक दूसरे की मदद को पहूँच सकते हैं।

एक और बिन्दु ये है कि इन्सान को उसी से तकलीफ और दुःख पहुँचने की आशंका होती है जो एक दूसरे से अत्याधिक निकट होते हैं। इसीलिए उनके पारसपारिक सम्बन्ध (बाहमी तअल्लुकात) खुशगवार और एक को दूसरे से मिलाए रखना एक सत्य धर्म का सबसे बड़ा कर्तव्य है ताकि बुराइयों से मुँह मोड़ कर ये पड़ोसी दोजख (नर्क) के बजाए स्वर्ग का आदर्श बनें और एक दूसरे की मुहब्बत और मदद पर भरोसा करके घर से बाहर निकलें और घर में कदम रखें।

इस्लाम ने इन्हीं सिद्धान्तों को सामने रखकर पड़ोसी के अधिकार की धाराएं (दफआत) बनाई है। अरबों में दूसरी कौमों से अधिक इस्लाम से पहले भी पड़ोसी के हुकूक अति महत्वपूर्ण थे, परन्तु वह मान–सम्मान के कारण थे। अगर किसी अरब के पड़ोसी पर कोई अत्याचार हो जाता तो वह दूसरे पड़ोसी के लिये शर्म की बात होती थी और इसलिये उसकी खातिर लड़ने–मरने को वह अपनी सज्जनता (शराफत) का निशान समझता था। इस्लाम ने आकर अरबों की इस चेतना को कुछ संशोधन और परिभाषा के साथ और मजबूत कर दिया।

वहय मुहम्मदी ने पड़ोसी के पहलू में एक और किस्म के पड़ोसी को जगह दी है, जिसको आम तौर से पडोसी नहीं कहते, मगर वह पड़ोसी की तरह अक्सर साथ होता है, जैसे एक सफर के दो साथी, एक मदरसे के दो तालिबेइल्म, एक फैक्टरी के दो मजदूर, एक गुरू के दो शिष्य, एक दुकान के दो साझीदार कि ये भी वास्तव में एक प्रकार की हमसायगी है। उसका दूसरा नाम हितचिन्तन और संगति है। उन सब प्रकार के पड़ोसियों में वरीयता उसको प्राप्त है जिसको पड़ोसी होने के अलावा निकटता या सहधर्मी का या कोई और दोहरा सम्बन्ध भी हो। कुरआन पाक ने ये व्याख्या पूरी तरह की है, इर्शाद हैः अनुवाद "(और (अल्लाह ने करीबी पड़ोसी और हमसाया बेगाना और पहलू के साथी के साथ (नेकी का आदेश दिया है)

इस "अलकुरबा" और "अलजुनुब" के अर्थों मे अहले

तफसीर (व्याख्या विद्धान) ने विभिन्नता जताई है, एक का कहना है कि "करीब" का अर्थ रिश्तेदार व करीबी और "बेगाना" का अर्थ गैर और अजनबी के हैं। दूसरे की राय है कि "नजदीक " का अर्थ सहधर्मी (हम मजहब) के हैं और "दूर" का तात्पर्य दूसरे धर्म वाले हैं, जैसे यहूदी, ईसाई, अनेकेश्वर वादी (मुश्रिक) आदि, (इब्ने जरीर तबरी) लेकिन वास्तव में ये विभिन्नता (इख्तेलाफ) बेवजह है, मुहम्मदी शिक्षा की मंशा ये है कि पड़ोसियों में उनको वरीयता दी जाएगी जिनके साथ इस पड़ोस के अलावा प्रेम और सर्म्पक का कोई दूसरा सम्बन्ध हो, चाहे वह निकटता और घनिष्टता हो या सहधर्मी हो या किसी और प्रकार का हित चिन्तन हो बहरहाल हक के साथ दोहरे सम्बन्धोंको इकहरे सम्बन्ध पर वरीयता प्राप्त है।

इस ईश्वरीय आदेश की व्याख्या हजरत मुहम्मद (सल्ल0) ने विभिन्न प्रकार से की है, सबसे बढ़कर ये कि आप (सल्ल0) ने उसंको आस्था (ईमान) का सीधा असर और परिणाम बताया। एक दिन सहाबा रजि0 की बैठक में आप (सल्ल0) मौजूद थे कि एक दिलचस्प अन्दाज से फरमाया "अल्लाह की कसम, वह मोमिन (आस्तिक) न होगा, अल्लाह की कसम वह मोमिन न होगा, अल्लाह की कसम वह मोमिन न होगा, प्राण न्योछावर करने वाले सहाबा रजि0 ने पूछा "कौन या रसूलल्लाह!" फरमाया "वह जिसका पड़ोसी उसकी शरारतों से सुरक्षित नहीं" (बुखारी)

एक और जगह आप (सल्ल0) ने फरमाया "जो अल्लाह और प्रलय (कयामत) पर ईमान (आस्था) रखता है उसको चाहिये कि अपने पड़ोसी का सम्मान करे" (बुखारी) एक और हदीस में है कि आप (सल्ल0) ने फरमाया! " जो व्यक्ति अल्लाह और प्रलय (रोज़े जज़ा) पर ईमान रखता है वह अपने पड़ोसी को तकलीफ न दे" (बुखारी) एक और मौके पर उसको अल्लाह की निकटता का माध्यम बताया है, ईर्शाद फरमाया! "अल्लाह के निकट साथियों में अच्छा वह है जो अपने साथी के लिये बेहतर है और पड़ोसियों में अच्छा वह है जो अपने पड़ोसी के लिये बेहतर है" (तिर्मिजी)

हजरत मुहम्मद (सल्ल0) ने उम्मुलमुमेनीन हजरत आईशा की शिक्षा के उद्देश्य से उनसे फरमाया कि "हजरत जिबरईल ने मुझे पड़ोसी के हुकूक की इतनी ताकीद की कि मैं समझा कि कहीं उनको विरासत का अधिकार न दिला दें" (बुखारी)। वास्तव में ये इशारह इस बात की ओर है कि पड़ोसियों का सम्बन्ध रिश्तेदारों के सम्बन्ध के करीब–करीब पहुँच जाता है।

पड़ोसियों में प्रेम का विकास और सम्बन्धों का मजबूती का बेहतरीन माध्यम परस्पर उपहारो का तबादला है। हजरत मुहम्मद (सल्ल0) स्वयं अपनी पतनियों को इसकी ताकीद करते थे, इसी आधार पर एक बार हजरत आईशा रजि0 ने पूछा "या रसूलल्लाह! मेरे दो पड़ोसी है तो मैं उनमें से किस के पास भेजूं? फरमाया! "जिसके घर का दरवाजा तुम्हारे घर के अधिक निकट हो" (बुखारी)

इस उपहार के लिये कीमती चीज की आवश्यकता नहीं बल्कि खाने–पीने की मामूली चीजें भी काफी हैं, कुछ न हो सके तो गोश्त का शोरबा ही हो, और वह अधिक मात्रा मे पानी बढ़ाकर ही क्यों न हो। अपने एक विश्वनीय साथी हजरत अबूजर रजि0 को नसीहत फरमाई कि "ऐ अबूजर! जब जब शोरबा पकाओ तो पानी बढ़ा दो और उससे अपने पड़ोसी की खबरगीरी करते रहो"। (मुस्लिम)

(शेष अगले अंक में)

एअलान

जिन हजरात का चन्दा फरवरी पर खत्म हो गया है बराहे करम वह अब 120 रुपया इरसाल फरमाएं। साथ ही अपने पाठकों से अनुरोध है कि वह सच्चा राही के खरीदार बढ़ा कर सहयोग दें (मैनेजर)

मुशरिक कौमों का शिर्क

– मौ० मुजीबुल्लाह नदवी

इस्लाम से कब्ल के मुशरिकीन हों या इस दौर के, वह इस हद तक तौहिद के काइल थे और हैं कि जमीन व आसमान चान्द सूरज, इन्सान और हैवान सब को अल्लाह तआला ने पैदा किया है और बड़े बड़े काम जितने हैं वह सब वही अंजाम देता है मगर उसी के साथ वह यह भी समझते थे और समझते हैं कि खुदा ने अपने कामों में कुछ फिरिश्तों और नेक लोगों को भी शरीक कर लिया है या दूसरे अल्फ़ाज़ में कुछ खुदाई ताकत इन में हुलूल (प्रवेश) कर गई है। या फिर मखलूकात में से कुछ ताकतवर चीजों के बारे में यह तसव्वूर करने लगते है कि इन में भी नफ़अ व नुकसान की कुदरत (शक्ति) मौजूद है या वह तजल्लीये इलाही (ईश प्रकाश) का मरकज़ (केन्द्र) हैं। मसलन चान्द सूरज सितार आग पानी बड़े बड़े दरख्त वगैरह, इस लिये दुआ व इबादत या हाजत रवाई का जो मुआमला खुदा के साथ उन्हे करना चाहिये था वह उन के साथ करने लगे। उन को खुश करने के लिये उन के सामने झुकने लगे, उन के दरबार में नज़्र व नियाज़ पेश करने लगे, उन से दुआएं और हाजतें मांगने लगे और फिर आहिस्ता, आहिस्ता उनको उन्हों ने खुदा की हैसीयत दे दी, उस का नतीजा यह हुआ कि खुदा की बे पायां ताकत का तसव्वुर उन के दिल से निकल गया या वह मान्द पड़ गया।

सूरज चान्द या दूसरी मख़्लूकात के साथ इबादत व परस्तिश का जो मुआमला वह करते हैं, वह इस लिये कि उन की निगाहें उन में थोड़ी सी ताकत देखती हैं मगर पत्थर और मिट्टी के देवी देवता बना कर जो उन के सामने सज्दा करते और झूकते हैं, तो यह मुजस्समे वह इन नेक लोगो के बनाते हैं जिन के बारे में उन का यह तसव्वुर है कि उन में भी एक दर्जे की खुदाई ताकत मौजूद है, या खुदा के यहां उन का इतना मरतबा है कि वह हमारी बात को खुदा तक पहुंचा कर उसे मनवा सकते हैं, या उन की सिफारिश खुदा के यहाँ रद नहीं हो सकती। कुर्आन पाक ने जिन बुतों की परिस्तिश का जिक्र किया है, मसलन मुशरिकीन के वुद्द, सुवाअ, यगूस, नस्र, लात, मनात, और उज्ज़ा वगैरह यह सब अपने वक्त के नेक लोग थे जिन के बारे में उनका यह तसव्वुर था कि उन में कुछ खुदाई ताकत है, इस लिये इन की मौत के बअद उन की मूर्तियां और मुजस्समे तय्यार कर के उनको नज़्रान–ए –अकीदत पेश करने लगे, इसी तरह हिन्दोस्तान में राम चन्द्र जी या दुर्गा देवी की जो मूर्तियां बना कर पूजते है, इन से दुआ मांगते है, अपनी हाजत रवाई के लिये उन पर चढ़ावा चढ़ाते है। तो अस्लन वह उन बरगुज़ीदा शख्सीयतों की पूजा करते हैं, उन को खुदा तक पहुंचने का वसीला समझते हैं, उन के बारे में उन का खयाल हैकि यह भगवान के अवतार हैं, कुर्आने पाक ने खुद उन के इस खयाल की वज़ाहत की है :–

अल्लाह के अलावा तुम जिनकी इबादत करते हो यह तुम ही जैसे बन्दे थे, तो तुम उनको अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिये उनको बुलाओ तो उनको चाहिये कि तुम्हारा काम कर दें। अगर तुम वाकई सच्चे हो।

(अअ़राफ़ : 194)

कुर्आन पाक ने सैकड़ों आयात में उनके इस खयाल की तरदीद की है। ख्वाह यह नेक लोग हों या फिरिश्ते या अजरामे समावी सूरज चान्द और सितारे हों। खुदाए कुददूस की इस फैली हुई कायनात के बनाने

में एक ज़र्रा के बराबर उनका कोई दख्ल नहीं है, और न किसी नफअ़ व नुक्सान के वह मालिक है..

"आप कह दीजिये कि तुम जिनको अपने गुमान में खुदा के अलावा बुलाते हो वह न तो कोई तक्लीफ तुमसे दूर कर सकते हैं और न कोई मुसीबत टाल सकते हैं।"

(बनी इस्राईल :57)

दूसरी जगह है :

"आप कह दीजिये कि तुम अपने गुमान में जिन को अल्लाह के अलावा पुकारते हो वह इस जमीन और आसमान में एक जर्रा के भी मालिक नहीं हैं और न उन के बनाने ही में उन की कोई शिरकत है और न इन में कोई अल्लाह का मददगार है।" (सबा :22)

दूसरी जगह है :

"जिन को वह अपने खुदा बना रहे हैं उन्हों ने कोई अदना चीज़ भी पैदा नही की है, वह खुद पैदा किये गये हैं, वह न अपने नफअ़ व नुक्सान के मालिक हैं और न जिन्दगी, मौत और दोबारा उठाए जाने के।" (फुर्कान :3)

जब इस खालिस तौहिद की तरफ उन को बुलाया जाता था और उन से सुवाल किया जाता था कि आखिरकार जब तुम अल्लाह को खालिक व मालिक मानते हो तो फिर दूसरी मख्लूकात को क्यों उस के साथ शरीक करते हो जवाब में कहते हैं कि :

"हम इन (बुतों) की इबादत इस लिये करते हैं कि यह नेक लोग हम को खुदा से करीब कर देंगे। (जुमर :3)

"अफसोस है कि आज कल बहुत से मुसलमान भी गुजरे हुए बुजुर्गों के बारे में यही तसव्वुर रखते हैं और उनकी कब्रों के साथ वही मुआमला करते हैं जो मुशरिकीन करते थे और करते है, जब उनको टोका जाता है तो वही जवाब देते हैं कि "हम तो ऐसा इस लिये करते हैं कि यह नेक लोग हम को खुदा से करीब कर देंगे" हालांकि कुर्आन ने इस को शिर्क करार दिया है मौलाना हाली मर्हूम ने मुसलमानों के इस शिर्क पर बड़ा अच्छा तबसिरा किया है :—

करे ग़ैर गर बुत की पूजा तो काफिर
जो ठहराए बेटा खुदा का तो काफिर
झुके आग पर बहरे सजदा तो काफिर
कवाकिब में माने करिशमा तो काफिर
मगर मोमिनों पर कुशादा हैं राहें
परस्तिश करें शौक से जिस की चाहें
नबी को जो चाहें खुदा कर दिखाएं
इमामों का रुत्बा नबी से बढ़ाएं
मज़ारों पे दिन रात नज़्रें चढ़ाएं
शहीदों से जा जा के मांगें दुआएं
न तौहीद में कुछ खलल इससे आए
न इस्लाम बिगड़े न ईमान जाए।

यही वजह है कि तमाम अंबिया और खुद रसूले पाक हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तौहीद की दावत के साथ शिर्क की नफी से अपने पैगाम की इब्तिदा फरमाया करते थे :

"ऐ लोगो! ला इलाह इल्लल्लाह का इक्रार करो फलाह पा जाओ गे, यअनी अल्लाह के अलावा कोई मअबूद नहीं"

कुर्आन पाक में इसी को तमाम अंबिया की दअवत का मरकजी नुक्ता बताया गया है। मुलाहजा हो :—

"आप से पहले भी हमने जितने रसूल भेजे हैं उन सब की तरफ यही वह्य की कि वह लोगों के सामने एअ़लान कर दें कि अल्लाह के अलावा कोई मअबूद नहीं है तो मेरी ही इबादत करो।"

(अल–अंबिया :25)

दूसरी आयात में हजरत नूह, हजरत हूद, हजरत सालेह, हजरत इब्राहीम और दूसरे अंबिया का नाम लेकर उन की इस दअवते तौहीद का जिक्र किया गया है।

कुर्आन पाक की दअवत का बुन्यादी नुक्ता यही है :—

"यह ऐसी किताब है जिस की आयतें बहुत मुहकम व जामिअ़ हैं, फिर उन को मुफस्सल बयान कर दिया गया है, यह नाजिल की हुई खुदाए हकीम व बसीर की है, जिसका पैगाम यह है कि अल्लाह के अलावा किसी की इबादत न करो।

(हूद :1,2)

ऊपर की तफ्सीलात से यह बातें वाजेह तौर पर मालूम होती हैं :

1. इस पूरी कायनात को खुदाए तआला ने पैदा किया है और वही अब भी इसे चला रहा है न तो उसकी तख्लीक में कोई शरीक है और न उस के नज्म व इन्तिजाम में

उस का कोई मददगार है, तौहीद का तकाजा है कि इन्सान यह समझे कि खल्क (पैदा करना) या अम्र (निजाम चलाना) किसी में भी उस का कोई शरीक नहीं है। कुर्आन पाक ने बार बार इस हकीकत का एअलान किया है:

"अला लहुल्खल्कु वल्अम्र"

(अअराफ :54)

सुन लो कि सारी कायनात की तख्लीक (पैदा करना) भी उसी की है और वही इसका इन्तिजाम चला रहा है।

शिर्क का एक बड़ा सबब यह है कि अल्लाह के अलावह किसी की अजमत (बड़ाई) इतनी बिठाई जाए कि उसे खुदा की खुदाई में दख़ील समझ लिया जाए, जैसे कि फिरिश्तों और जिन्नों के बारे में बअ़ज मुशरिक कौमें यह तसव्वुर रखती थी, या उस को उस का अवतार मान लिया जाए जैसा कि राम चन्द्र जी, कृष्ण जी के बारे में हिन्दुओं का खयाल है, या किसी को खुदा का बेटा मान लिया जाए, जैसा कि ईसाई समझते है। कुर्आने पाक ने इन तमाम अकीदों को शिर्क करार दिया है।

"अल्लाह के अलावा जिन लोगो कि तुम इबादत करते हो वह सिर्फ नाम हैं जिन को तुमने और तुम्हारे बाप दादाओं ने रख लिया है, अल्लाह तआला ने इस की कोई दलील नहीं उतारी है।" (यूसुफ :40)

दुआ व इबादत नज्र व नियाज और हाजत तलबी सिर्फ खुदा के लिये मख्सूस है, अल्लाह के अलावा न तो किसी से दुआ मांगी जाए, न किसी को सज्दा किया जाए, न किसी के मुजस्समों या कब्रों को नज्र व नियाज पेश की जाए, न अपनी कोई हाजत किसी देवी देवता, या किसी बुजर्ग की कब्र के सामने पेश की जाए यह सारे काम शिर्किया है।

"तुम लोग सूरज और चान्द की परस्तिश न करों बल्कि उसकी परस्तिाश करो जिसने इन को पैदा किया।" (फुस्सिलत :37)

बअ़ज़ लोग यह कहते है कि दुनिया के हर काम के लिये हम को वासते की जरूरत होती है तो खुदा की इतनी बड़ी बारगाह में हम बिगैर वास्ता अपनी हाजत व जरूरत कैसे पैश कर सकते हैं, इस लिये हम नेक लोगों और बुजुर्गो को अपनी दुआओं में वास्ता बनाते हैं, तो यह दो बाते समझ लेनी चाहिये।

1. एक यह कि खुदाए तआला हर बन्दे की दुआ और उस की जरूरत बराह रासत सुनता है। यहां तक कि उस के दिल के इरादों से भी वाकिफ़ हैं। उसका दरबार हर अमीर व ग़रीब, जबरदस्त व जेर दस्त, कमजोर व शहजोर सब के लिये बराबर खुला हुआ है इस लिये वहां किसी वास्ते की जरूरत नहीं है। कुर्आने पाक में इस खयाल को दिल से निकालने के लिये बार बार यह बात दूहाराई गई है–

"जब बन्दा मुझसे मांगता है तो मैं उस से करीब होता हूँ और दुआ करने वाले की दुआ कबूल करता हुँ।" (अलबकरह :186)

"बेशक हमने इन्सान को पैदा किया है, और उस के दिल में जो खयाल पैदा होता है उसे हम जानते हैं और हम उसके रगे गुलू से भी जियादा करीब हैं"। (क़ाफ़ :16)

अब इन आयात की रोशनी में गौर किया जाए, तो जो लोग दुन्या की बारगाहों की तरह, खुदाए कुददूस की बारगाहे आली में अपनी हाजतें पेश करने के लिये जरीआ और वसीले पर यक़ीन रखते हैं उनका यह तसव्वुर कितना गलत और गुमराह कुन (पथ भ्रष्टक) है।

दूसरी बात यह कि वह अफआल जो खुदा के लिये मख्सूस हैं मसलन सज्दा, रुकूअ़, दुआ, इबादत, तवाफ़, कुर्बानी, नज़्र व नियाज का मुआमला किसी जिन्दा या मुर्दा हस्ती के साथ करना, या किसी मुर्दा इन्सान या फिरिश्ता या गुजरे हुए बुजुर्गों को वसीला बनाने के लिये ऐसा करना ममनूअ (मना) है। जिन्दों से दुआ कराना या माददी जरूरतों में एक दूसरे से मदद लेना शिर्क नहीं है, जैसे हम पानी से अपनी प्यास बुझाते हैं, खाने से पेट भरते हैं डाक्टर से इलाज कराते है, उस्ताद से तअ़लीम हासिल करते हैं, जाहिर है कि यह काम शिर्क नहीं हैं।

साम्राज्यवाद और पूंजीवाद
के चंगुल से मुक्त नहीं हो सका देश

– हनीफा बेगम

आज़ादी के 62 साल बाद भी भारत की गरीब और शोषित जनता साम्राज्यवादी और पूंजीवादी व्यवस्था से मुक्त नहीं हो पायी है। साम्राज्यवाद और पूंजीवादी व्यवस्था का सिर्फ स्वरूप बदला है, शोषण का तरीका बदला है लेकिन शोषण ख़त्म नहीं हुआ। सदियों पुरानी सामंती व्यवस्था को सरकार भी खत्म नहीं करना चाहती और न इसके लिए कभी गंभीर कोशिश की। इसी का परिणाम है कि देश की बहुसंख्यक जनता इस 'कोढ़' से आज़ाद नहीं हो सकी।

सामंती व्यवस्था का एक रूप हमें बिहार में उस समय देखने को मिला जब सैकड़ों लोगों की उपस्थिति में, टी0वी0 चैनलों के कैमरों के सामने गांव के ही एक दबंग आदमी ने दो युवकों को भैंस चुराने के आरोप में निर्भयाता से सरेआम 'तड़पा–तड़पा कर मार डाला था। यह एक उदाहरण है। यह साम्राज्यवादी व्यवस्था पूरे देश में चल रही है जहां गरीब आदमी तड़प रहा है और सामंती व्यवस्था अट्टाहास कर रही है। ऐसा नहीं है कि यह व्यवस्था सिर्फ भारत में निरंकुश दौड़ रही है बल्कि अमेरिका जैसी शक्ति भी इससे अछूती नहीं है। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि अमेरिका ही शोषण का एक बड़ा केन्द्र है। अमेरिका के बारे में आगे चर्चा करेंगे कि उसने इस व्यवस्था से आज़ाद होने के लिए कितना संघर्ष किया था और आज वही इसका सबसे बड़ा स्रोत है।

साम्राज्यवाद और पूंजीवादी व्यवस्था ने ग्रामीणों और शहरों में कभी अन्तर नहीं कियां दोनों जगह गरीबों को पनपने नहीं दिया। पूंजीवाद यानी सामंती व्यवस्था का सजीव चित्रण फिल्म 'मदर इंडिण्या' में महबूब खान ने किया था जिसमें सुक्खी लाला का क़र्ज़ा तमाम ज़िन्दगी किसान नहीं चुका पाता और वही क़र्ज़ा उसके बेटों पर भी बरकरार रहता है। इस लेख का लेखक भी गांव में पैदा हुआ, समझदार होने तक गांव में ही रहा। वहां देखा कि पूरे गांव में सिर्फ एक–दो लोग ही धनी थे बाकी लोग उनकी पूंजीवादी व्यवस्था के शिकार हुआ करते थे। क़र्ज़ में डूबे लोग क़र्ज़ा और उसकी ब्याज तो चुकाते ही थे साथ ही वह साहूकार मुफ्त में 'बेगार' कराता था। यही व्यवस्था शहरों और क़स्बों में चल रही है। मकान शहर और क़स्बों में सबसे बड़ी जायदाद मानी जाती रही है। इसी को लोग गिरवी रखते थे। बाद में वह मकान क़र्ज़ में डूब जाता था।

कमोबेश यही स्थिति आज भी गांव और शहरों की है। शोषण का तरीका बदला है। शोषक वही लोग है जो पहले हुआ करते थे। पहले पूरी दुनिया में इंग्लैंड का साम्राज्य था। सन् 1700 के पूर्वाद्ध में जब अमेरिका आजाद हुआ तो जॉर्ज वाशिंगटन वहां के पहले राष्ट्रपति बने। उन्हीं के नाम पर अमेरिका की राजधानी का नाम वाशिंगटन रखा गया था। उस समय चूंकि अमेरिका आज़ाद हुआ था उसमें साम्राज्यवादी व्यवस्था से मुक्ति की छटपटाहट देखी गयी थी। लेकिन जैसे ही वह थोड़ा समृद्ध हुआ तो वह पूंजीवादी व्यवस्था का सबसे बड़ा समर्थक बन गया। देखते ही देखते उसने पूरी दुनिया को अपनी गिरफ़्त में ले लिया। इससे भारत भी अछूता नहीं रह सका।

जिस मॉल संस्कृति की चकाचौंध को हम प्रगति का प्रतीक मान रहे हैं दरअस्ल यह पूंजीवादी का रिफाइंड संस्करण है। मॉल, रिलायंस फ्रेस, सुमीक्षा जैसे अनेक स्टोर खुल रहे हैं। इससे आम आदमी तो उसकी गिरफ़्त में आ ही रहा है। गरीब दुकानदारों, हाकरों , गली–गली में सामान बेचने वालों और इससे जुड़े अन्य लोगों की रोजी–रोटी पर सीधा असर पड़ रहा है, क्योंकि ये कंपनियां सीधे किसानों से निर्माताओं से माल ख़रीद कर अपने ढंग से बेचती हैं। ग़रीब दुकानदार के पास इतना पैसा ही नहीं है जो सीधे किसानों या निर्माता कंपनियों से थोक में माल खरीद सके। धीरे–धीरे आम आदमी

को भी मॉल संस्कृति की आदत पड़ जाएगी तो पूंजीवाद पूरी तरह हम लोगों पर हावी हो जाएगा।

आज नगरों, महानगारों में कितने ऐसे घर हैं जो क़र्ज़ में नहीं डूबे हुए हैं प्राइवेट विदेशी बैंकों का साम्राज्य है। एक बार सुहाने सपने दिखाकर सस्ती ब्याज दर का लालच देकर आपकों क़र्ज़ के जाल में फंसा दिया जाता है उसके बाद आपके पास दो ही रास्ते रह जाते हैं या तो एक–एक पैसा बचाकर, बच्चों का पेट काटकर उस क़र्ज़ को जीवन भर क़िस्तों में अदा करते रहो या फिर हताशा में मौत को गले लगाओ। क़र्ज़ में डूबे और मंदी की मार के शिकार कितने ही लोग इस दुनिया को छोड़ चुके हैं। भौतिकवाद–पूंजीवाद और साम्राज्यवाद एक–दूसरे के पूरक और पोषक होते हैं।

कहने को तो हम आज़ाद हो गये हैं लेकिन सच्चाई यह कि साम्राज्यवाद और पूंजीवाद की जकड़ के बाहर नहीं आ सके हैं। इसमें हैरतअंगेज़ बात यह है कि हमें लगता ही नहीं है कि हम पूंजीवाद या साम्राज्यवाद के शिकार हैं। इसे हम तरक़्क़ी का नाम दे रहे हैं। इसे देखने की हम ज़रूरत नहीं समझ रहे कि हमारी निर्भरता दूसरों पर किस हद तक बढ़ गयी है।

अब ज़रा राजनीति के साम्राज्यवाद पर नज़र दौड़ाइए ! कांग्रेस, भाजपा, सपा, बसपा, वामदलों से लेकर किसी भी पार्टी पर दृष्टिपात कर लीजिए, बहुत कम नेता ऐसे मिलेंगे जो ग़रीब हों। इन सभी नेताओं की पृष्ठभूमि को देख लीजिए सभी साधन सम्पन्न परिवार से हैं। एक दो भले ही अपवाद हो सकते हैं। इन पार्टियों के ज्यादातर नेता पूरी तरह साम्राज्यवाद के द्योतक रहे हैं। क्या मजाल की इनके सामने कोई आदमी अपना सिर उठाये ?

जीतने से पहले ही ये लोग इतने 'मारा धारा' होते हैं कि लाठी, बंदूक़ या अन्य घातक हथियारों के बल पर किसी को भी झुका लेते हैं, मनवा लेते हैं, मार देते हैं, हर काम कर लेते हैं। इसमें हैरत क़तई नहीं कि कानून भी येन केन प्रकारेण इन्हीं के साथ दिखायी देता है। यानी राजनीति के क्षेत्र में भी ग़रीब ख़ाली हाथ है।

आज़ादी के बाद जो लोग राजनीति में आये वो कौन थे और कौन हैं? राजा, महाराजा, नवाब, राय साहब, जमींदार, साहूकार, ठाकुर साहब यानी वे लोग जो आज़ादी से पहले साम्राज्यवाद का हिस्सा थे। देश आजाद हुआ तो उन्होंने राजनीति का दामन थामा ताकि उनका साम्राज्यवाद बना रहे। अपराधियों का अलग साम्राज्यावाद चल रहा है। कहने को तो जेलें हैं, कानून है, न्याय व्यवस्था है लेकिन ये सब मिलकर अपराधी तत्वों के साम्राज्यवाद को कितना प्रभावित कर पाते है, यह सवाल है। क्या यह आपराधिक साम्राज्यवाद नहीं कि पप्पू यादव, राजा भैया जैसे लोग जेल में रहकर भी आदेश जारी कर देते हैं और अपने गुर्गों से कहकर जिसको चाहते हैं उसको उठवा लेते हैं। मरवा देत हैं या कुछ भी करा देते हैं। मुंबई में तो बाक़ायदा अपराधी साम्राज्यवाद के क्षेत्र बंटे हुए हैं।

राजनीति में देखिये ! गुजरात में मोदी का कितना बड़ा साम्राज्यवाद रहा है। हजारों मुसलमानों का कत्लेआम करा दिया, लोगों को ज़िन्दा जला दिया फिर भी कानून उनका कुछ नहीं बिगाड़ पाया। यह इस बात की दलील है कि उनका साम्राज्य कायम है। आजादी के बाद से ही सत्ता में अघोषित भागीदारी धीरेन्द्र बृह्मचारी, चन्द्रास्वामी, योगी आदित्यनाथ, बाबा रामदेव और विहिप के साधु–संतों की रही। इनका साम्राज्यवाद क़ायम रहा और है।

इसी तरह देश की डेढ़ सौ करोड़ जनता का धन देश के सिर्फ 75 घरानों के पास है। चौथाई पैसा देश की पूरी जनता के बीच फैला हुआ है। जाहिर है पूंजीवाद इन्हीं घरानों के कारण फैलता गया।

कहने का आशयं है कि हम यह गर्व तो कर सकते हैं कि हम स्वतंत्र हो गये हैं। कहने और करने की आज़ादी भी मिल गयी है लेकिन यह आज़ादी ज्यादातर साम्राज्यवाद की शिकार रही है। आम भारतीय आज़ादी की खुली सांस में हवा तो ले रहा है लेकिन कहीं न कहीं वह पूंजीवाद का शिकार है। अगर कोई इसका हाल फ़िलहाल हल जानना चाहे तो उसका कोई हल नज़र नहीं आ रहा है।

❑❑

क़िस्त 12

हम कैसे पढ़ायें?

शिक्षकों के लिय

तीसरा अध्याय

– डॉ. सलामत उल्लाह

विषयों और पाठों की तरतीब

शीर्षक की व्याख्या

यह बात जान लेने पर कि हम अपने स्कूल में किस विषय का कितना हिस्सा पढ़ायें, हमें यह जानना चाहिये कि स्कूल की शिक्षा में किस समय कौन सा विषय शुरू किया जाये और किसी खास मंजिल पर इसका कितना हिस्सा पढ़ाया जाये, और यह कि प्रत्येक विषय के विभिन्न शीर्षकों को किस प्रकार क्रमबद्ध किया जाये कि इन में पारस्पारिक सम्बन्ध कायम रहे ताकि समझने में आसानी हो। इस अध्याय में हम इन्हीं बातों पर विचार करें गे।

पाठयक्रम और अध्यापक

प्रत्येक निष्ठ अध्यापक अपनी उपज, सूझ बूझ और मेहनत से पढ़ाने का काम अंजाम देता है। इसलिये यह बात कुछ मुनासिब मालूम नहीं होती कि एक बंधा टिका पाठयक्रम दे दिया जाये जिस से वह जरा भी इधर उधर न जा सके। लेकिन शिक्षक के काम के लिये सिर्फ निष्ठा और नेक नियती ही काफी नहीं है, वह उन आम उसूलों से नावाकिफ या बेनियाज रहकर अपना काम भली प्रकार अंजाम नहीं दे सकता जिन पर पाठयक्रम की तरतीब व क्रमबद्धता निर्भर है। अतएवं शिक्षक के मार्ग दर्शन के लिये शैक्षिक विषयों की क्रमबद्धता का एक स्वरूप (खाका) नीचे दिया जा रहा है।

पढ़ना

बच्चे को पढ़ना कब सिखाना चाहिये? यह एक ऐसा सवाल है जिस के बारे में लोगों की अलग अलग रायें हैं। कुछ इसे पाँच साल की उम्र में शुरू कर देना मुनासिब समझते हैं। और बाज सात साल की उम्र तक स्थगित करने के हक में हैं। इस में कोई शक नहीं कि हम अपने मदरसों में पढ़ना सिखाने का काम शुरू करने में जल्दी करते हैं। इस से पहले कि पढ़ना सिखाने का काम शुरू किया जाये तीन शर्तों का पूरा होना जरूरी है। पहली यह कि बच्च आसानी और तेजी से बोल सकता हो दूसरे उस का मानसिक विकास इतना हो गया हो कि वह आवजों में फर्क कर सके, तीसरा यह कि ऐसे किस्से कहानियां और मजेदार पहेलियां सुनते सुनते उन से इतनी दिलचस्पी हो गई हो कि उस में इनकी खातिर किताब पढ़ने का शौक पैदा हो जाये। शुरू में पढ़ने की क्रिया इतनी कठिन होती है कि पढ़ते समय हाव भाव से इबारत (गद्याश पद्याश) का मावार्य अदर नहीं हो सकता। बच्चे की सारी मानसिक शक्ति अक्षरों और उनकी आवाज़ के साथ तअ़ल्लुक पैदा करने में खर्च होती है अतएवं जब बच्चे को पहले दो वर्षों में काफी तेजी से पढ़ने की मश्क हो जाये या यूँ कहिये कि बिना माइड पर ज्यादा जोर दिये हुए वह अक्षरों और उनकी आवाजों में तअल्लुक पैदा करने के काबिल हो जाये तो जरूरी होगा कि हाव भाव के उचित उतार चढ़ाव और समय की पाबन्दी पर जोर दिया जाये। इसके लिये हमें पढ़ने की विषय वस्तु का चयन करते समय इस बात का ध्यान रखना पड़ेगा कि वह बच्चे के लिये रोचक और उस की समझ में आजाने वाली हो। और फिर जिस समय वह पढ़ रहा है उसे अपनी कल्पना को इस्तेमाल करने का मौका दिया जाये जब बच्चे को पढ़ने के मेकानिकी पहलू पर काबू हो जाये तो उसे अपने तौर पर अभ्यास करने के लिये ऐसा लिट्रेचर दिया जाये जिस में उसकी रूचि हो जैसे किस्से और कहानियाँ आगे चलकर यह काम दूसरे विषयों जैसे इतिहास, सामान्य विज्ञान आदि के सिल सिले में भी कराया जा सकता है।

लिखना

सामान्यतः लिखना उस समय सिखाया जाता है, जब पढ़ने में बहुत कुछ महारत हो जाती है।

पढ़ना और लिखना शिक्षा के दो महत्वपूर्ण जरियः और साधन हैं। इन्हें साथ साथ शुरू करने में भी हर्ज नहीं है। लिखना सिखाने के बारे में वह तमाम बातें याद रखनी चाहियें जिनका उल्लेख गत अध्याय में किया जा चुका है। जब बच्चा अच्छी तरह लिखना सीख जाये अर्थात जब उसे इस के मेकानिकी पहलू पर काबू हो जाये तो पढ़ने की तरह इसके लिये भी अलग से समय देने की जरूरत नहीं रहेगी। और इसका काम दूसरे विषयों के दौरान में हो जाया करेगा। लिखने में सफाई, अक्षरों की बनावट और मिलावट पर हमेशा जोर देना चाहिय।

लेख लिखना (इँशा)

शुरू में दो तीन साल अर्थात दस साल की उम्र तक लेख लिखने का काम मौखिक होगा और इस के बाद मौखिक और लिखित दोनों। ज्यों ज्यों लिखित कार्य में बच्चों को अधिक सुविधा और योग्यता पैदा होती जाए गी मौरिख काम कम होता जायेगा, लेकिन प्राथमिक स्कूल में किसी मंजिल पर भी मौखिक कार्य को बिल्कुल खत्म नहीं किया जा सकता। इँशा के लिये उपयुक्त विषय और विषय वस्तु के बारे में पिछले अध्याय में बताया जा चुका है।

इतिहास

प्राथमिक स्कूल में इतिहास किस्से कहानियां तथा जीवनियों के रूप मं प्रस्तुत किया जायेगा जैसा कि पहले बयान किया गया है। इतिहास की शिक्षा की शुरूआत मनुष्य के जीवन से होगी। और बच्चा सभयता और संस्कृति के विभिन्न युगों से गुजरता हुआ वर्तमान युग में पहुँचेगा। बहुत से लोगों को इस तरतीब पर एतराज है। उन का कहना है कि जिस प्रकार भूगोल बच्चे के निकटतम माहौल अर्थात घर और गाँव से शुरू होता है उसी प्रकार इतिहास निकटतम युग से अर्थात आज कल से शुरू होना चाहिये। लेकिन अगर गहरी नजर से देखा जाये तो यह एतराज कुछ अधिक ध्यान देने योग्य नहीं है। क्यों कि हमें सिर्फ यही नहीं देखना चाहिये कि क्या चीज बच्चे के काल और माहौल के लेहाज से, करीब है, बल्कि असल सवाल यह है कि कौन सी चीज उस की दिलचस्पियों से करीब है। उस का भौगोलिक वातावरण निश्चय ही उस के लिये दिलचस्प है। लेकिन उसे अपने जमाने के सियासी या समाजी समस्याओं से इतनी दिलचस्पी नहीं होती जितनी कि इन्सान की दैनिक जीवन की घटनाओं से। चाहे वह आज के हों या दस हजार साल पहले के। और चूंकि प्रारम्भिक जीवन की घटनायें अधिक आसान और बच्चे की कल्पना से करीब है, इस लिये प्राथमिक कक्षाओं में प्रारम्भिकमानव के जीवन और उस से मिलते जुलते नमूने जो आज हमारे समाज में मौजूद हैं बहुत दिलचस्प साबित होंगे। इस के अलावा बच्चों को मौजूदा समाज से भी वाकिफ़ करना चाहिये।

अतः प्राथमिक स्कूल की प्रत्येक कक्षा में कुछ बाते तो पुराने इतिहास से होनी चाहिये और कुछ बातें मौजूदा समाजी जिन्दगी से । इस तरह बच्चों के दिमाग मे कुल मानव इतिहास का एक खाकाः आ जायेगा।

भूगोल

पुराना तरीकाः यह था कि भूगोल की शिक्षा पर्वत, नदी, झील, द्वीप आदि की परिभाषाओं से प्रारम्भ होती थी। वास्तव मे यह विधि बच्चे के मनोविज्ञान के गलत ज्ञान पर आधारित थी कि बच्चा बालिग इन्सान का एक छोटा सा नमूना है और इस लिये वह हर उस चीज को समझ सकता है जिसे बालिग व प्रौढ़ इन्सान समझ सकता है। सिर्फ इतनी शर्त है कि थोड़ा थोड़ा कर के समझाया जाये। लेकिन आधुनिक मनोविज्ञान के अनुसार भूगोल भी इतिहास के समान घर से शरू होना चाहिये। इस उसूल के इस्तेमाल में भी एक गल्ती की आशंका है। अर्थात सम्भव है कि लोग यह समझे कि अनिवार्यतः छोटी चीजों से बड़ी चीजों की तरफ बढ़ना चाहिये और पहले घर, फिर गाँव, इसके बाद जिला और इसी प्रकार सोपानवार कुल पृथ्वी के भूगोल तक पहुँचना चहिये। सही तरीकः यह है कि भूगोल के प्रारम्भिक उसूल समझाने के बाद बच्चे के जेहन में संसार का कुल की हैसियत से परिकल्पना पैदा की जाये ताकि वह इस के तअल्लुक से अपने आस पास को देख और समझ सके।

भूगोल का पहला सोपन जो सात आठ साल में शुरू होगा, दूरी और दिशा की परिकल्पना पर आधारित होगा। यह चीजें स्कूल और घर की सीमायें मालूम कराने के दौरान में बताई जा सकती हैं। सूर्यादय और सूर्यास्त, कुतुबनुमा और ध्रुवतारा की मदद से दिशायें और सूरज व सितारों कें जरियः समय मालूम करने के तरीके बताये जायेंगे। स्कूल और खेल के मैदान का नक्शा बच्चों की मदद से बनाया जायेगा जिस से उन्हें नक्शे के अनिवार्य और महत्व का ज्ञान होगा। इसके बाद गाँव या शहर और जिले का भूगोल पहले बतौर खाके के फिर विस्तार के साथ लिया जायेगा। फिर पव्रतों, नदियों और ढाल की परिकल्पना कायम कर के प्राकृतिक मानचित्र पर धयान दिया जायेगा। यह चीजें दस ग्यारह साल की उम्र तक हो जानी चाहिये।

भूगोल का दूसरा सोपान दस ग्यारह साल से तेरह चौदह साल की उम्र तक के बच्चों से सम्बन्धित है। इस में अपने देश से व्यापारिक व राजनीतिक सम्बन्ध रखने वाले देशों के भूगोल से बहस होगी। और प्राकृतिक भूगोल के दिन–रात ऋतु–परिवर्तन, जलवायु को सुनिश्चित करने वाली चीजें आदि लेनी होंगी।

(जारी)

प्रस्तुति : एम० हसन अंसारी

❑❑

किस्त 2

जग नायक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

मौ0 मु0 राबे हसनी नदवी

अनुवादक : मु0 गुफरान नदवी

हजरत आदम अलैहिस्सलाम ने अपनी भूल चूक की मुआफी बहुत आह व जारी के साथ तलब की, अल्लाह तआला ने उन को मुआफ कर दिया, लेकिन उन की तबीअत में हुक्म की खिलाफ वरजी का जो पहलू जाहिर हुआ था उस की बिना पर उन को और उनकी औलाद को जमीन पर रहनेके साथ उन के आज्ञा पालन के इम्तिहान का इरादा फरमाया ताकि वह अब अपने रब की अवज्ञा से वचन का सुबूत अपने अमलों से सिद्ध करें कि वह जन्नत में रहने के योग्य हैं और यही हुक्म जिन्नातों के लिये रखा गया, जिस का सिल्सिला इस दुन्या के खत्म होने और कियामत आने तक जारी रखा गया ताकि आदम अलैहिस्सलाम की औलाद और जिन्नतों में वह लोग जो इब्लीस की औलाद और उस की पैरवी करने वाले नहीं हैं, उन की जांच हो सके कि वह अल्लाह तआला के नेक बन्दे बनें गे या नफरमान बन्दे।

दीनी रहनुमाई बसूरत नुबुव्वत

दुन्या में इन्सानी जिन्दगी का सिल्सिला शुरूअ होने के पश्चात, एक के पीछे दूसरी इन्सानी नस्लों ने दुन्या को आबाद किया और अल्लाह के हुक्मों पर चले लेकिन धीरे धीरे अपने मन की चाहत और दुन्या का लुत्फ लेने में अपने अखलाक (आयरण) दुरस्त करने की तरफ से मुंह मोड़ने लगे और अपने पालनहार और जगत स्वामी की अवज्ञा करने लगे तो रहीम व करीम अल्लाह ने उन को समझाने बुझाने और कुमार्ग से बचाने के लिये इन ही में से किसी को अपना सन्देष्टा बना कर भेजने का सिल्सिला शुरूअ किया और समय समयपर इन को भेजता रहा यह महापुरूष लोग नबी और रसूल कहलाते हैं। यह नबी आवश्यकतानुसार कौमों में आते रहे। हर कौम में जब जब बुरी बातें आम हुई कोई नबी या रसूल भेजा गया। दुन्या में जहां जहां आबादी हुई और अल्लाह तआला की नाफरमानी बढ़ी तो नबी भेजा गया, इस प्रकार हर जगह नबी आया और यह अंबिया (नबी लोग) अपनी अपनी कौमों को भले ढंग से सत्य असत्य का अंतर समझाते रहे और उन को सत्य मार्ग पर लाने के लिये दिल व जान लगाते रहे। (जारी)

❑❑

गीदड़ की सौ साल की ज़िन्दगी से शेर की एक दिन की ज़िन्दगी बेहतर है

-नजमुस्साकिब अब्बासी, ग़ाजीपुरी

शेरे मैसूर सुल्तान टीपू शहीद रह0 एक महान देश भक्त कुशल योद्धा और न्यायप्रिय शासक थे। अपनी बहादुरी, न्यायप्रियता और शिष्टाचार के कारण उन्होंने सीमित समय में लोकप्रियता के आकाश को छू लिया था, मगर मैसूरी पृजा भितर घातियों के कारण लम्बे समय तक इस शीतल छांव से लाभ न उठा सकी।

सुल्तान टीपू शहीद रह0 का जन्म 20 नवम्बर 1750 को हुवा और उनके पिता का नाम हैदर अली था जो कि मैसूर राज्य के शासक थे। वह बहादुर और कुशल योद्धा होने के साथ–साथ बहतरीन बाप भी थे। उन्होंने सुल्तान टीपू शहीद रह0 का पालन–पोषण इस्लामी संस्कृति के अनूरूप किया और उन्हें राजनीति और युद्ध का सफल योद्धा बनाया। जिस समय छोटे–छोटे राज्यों में बंटे देश को इस्ट इंडिया कम्पनी एक–एक करके अपनी मूट्ठी में ले रही थी, उस समय यह हैदर अली फिरंगियों के बढ़ते कदम को पीछे धकेलने के लिये मैदान में डटे थे। उन्होंने हमेशा अंग्रेजों के वर्चस्व को चुनौती दी और इसी हाल में सन् 1786 ई0 में इस नश्वर संसार को अलविदा कह दिया।

पिता हैदर अली के देहांत के बाद सुल्तान टीपू शहीद रह0 को मैसूर राज्य का काँटों से भरा ताज मिला। सिंहासन संभालते ही उन्होंने एलान किया कि ''हिन्दुस्तान हिनदुस्तानियों के लिये और राजा राज्य के लिये है। उनके इस एलान से अंग्रेजों की धड़कने बढ़ने लगी अपने पिता के उद्देश्यों को पूरा करने के लिये वह पहले दिन से ही जुट गये। अंग्रेजों से भिड़ने के लिये शेरे मैसूर ने उनके प्रतिद्वन्दी फ्रासीसीयों को सेना में शामिल किया। उनके दांत खट्टे करने के लिये निजाम और मराठों को अपने साथ मिलाया। फिरंगियों को भारत से खदेड़ने के लिये सुल्तान टीपू शहीद रह0 होल्कर नाना फड़नवीस, सिंधिया और मराठो का भी सहयोग लिया।

सुल्तान टीपू जो युद्ध की यूरोपीय तकनीक में पारगत थे। उनकी राजनैतिक और रणनीतिक कौशल देखकर फिरंगी दंग थे। अमेद्य किले को भेदने के लिये अंग्रेजों ने उनके विश्वसनीय मंत्री मीर सादिक को भविष्य का सुन्दर सपना दिखा कर खरीद लिया। जंग के मैदान में एक बार हार का मजा चख चुके फिरंगी दूसरी बार लड़ाई से ठीक पहले निजाम और मराठा को तोड़ने में सफल हो गये। अचानक अकेले हो जाने के बावजूद शेरे मैसूर घबराए नहीं और डट कर उनका मुकाबला किया। हाँलाकि इस जंग में उन्हें बहुत नुकसान उठाना पड़ा। अतः मौके की नजाकत समझते हुए अपने विश्वसनीय मंत्रियों की सलाह पर अंग्रेजों से संधि कर ली। संधि शर्त के अनुसार टीपू को अपने बेटों को बन्धक के रूप मं सौपना पड़ा और फिर ढेड करोड़ रुपया नकद मुआवजे के रूप में कुछ उपजाऊ भाग देकर अपने जिगर के टुकड़ों को छुड़ाना पड़ा।

इस घटना के बाद सुल्तान टीपू अपनी सैन्य क्षमता को सुढ़ृढ़ करने में तल्लीन हो गये ताकि फिरंगियों को देश से खदेड़ा जा सके। जब इसकी जानकारी विश्वासघाती मीर सादिक ने अंग्रेजों को दी तो वह चोकन्ने हो गऐ। फिर उन्होंने शेरे मैसूर की बढ़ती सैन्य शक्ति को रोकने का प्रयास आरम्भ कर दिया। वह इस बात को भली–भाँति जानते थे कि अगर इनकी सैन्य शक्ति पर लगाम न लगाया तो वह उन्हें देश से खदेड़ देगें।

फिरंगियों ने सुल्तान टीपू के

राज महल के कुछ विश्वासघातियों से मिलकर एक सफल षडयंत्र रचा। अतः योजना के अनुसार 4 मई 1799 को अंग्रेजी सेना मैसूर राज्य में घुस गई, और धमासान युद्ध शुरू हो गया। किले में छुपे गद्दार मीर सादिक के सैनिकों ने अवसर पाते ही किले का दरवाजा खोल दिया और अंग्रेजी सेना किले में घुसने का हर सम्भव प्रयास करने लगी। ये देखकर शेरे मैसूर अपने वफादारों के साथ फिरंगियों पर टूट पड़े और तब तक अपने मजबूत बाजुओं से दुश्मनों के सरों का ढ़ेर लगाते रहे जब तक अल्लाह ने साँसे छीन न लीं। जब अंग्रेज जर्नल हैरिस ने शहीदे आजम की लाश देखी तो चिल्ला उठा कि "अबहिन्दुस्तान हमारा है"। इस घटना के बाद ये बात सत्य प्रमाणित हुअ अथार्त समस्त हिन्दुस्तान उनके चंगुल में आ गया।

अंग्रेजी सेना जब किले को चारों और से घेरने का प्रयास कर रही थी तो सुल्तान टीपू के एक मंत्री ने सलाहदी कि इस समय आप किसी सुरक्षित गुप्त स्थान पर चले जाएं और वहीं से युद्ध करें। इस पर शेरे मैसूर ने एक तारीखी जुमला कहा कि "गीदड की सो साल की जिन्दगी से शेर की एक दिन की जिन्दगी बेहतर है" क्या कोई शासक ऐसा जुम्ला कह पाया है?। सुल्तान टीपू विश्व के पहले शासक है जिसने राकेट मिजाइल का युद्ध में प्रयोग किया। मगर इतिहास के पन्नों में ये सुनहरी इबारत क्यों नहीं दर्ज है?।

सुल्तान टीपू से जुड़ी अजब विडम्बना ये है कि अधिकतर विदेशी और जनसंघी मानसिकता के इतिहास कारों ने सुल्तान टीपू को अत्याचारी और हिन्दू विरोधी बताते हैं और आरोप गढ़ते हैं कि उन्होंने हिन्दुओं को शक्ति के बल पर मुसलमान बनाया। हालांकि इन आरोपों में कदापि सच्चाई नहीं है। सुल्तान टीपू का तो हिन्दू प्रजा से दृढ़यात्मक सम्बन्ध था। मैसूर के गजेटियर में तीस से अधिक ऐसे खत मौजूद हैं जो उन्होंने श्रृँगेरीमठ के शंकराचार्य को लिखा था। हिन्दू मन्दिरों को जागीरें दी थीं। वेंकट रमन, श्रीरंगनाथन और श्रीनिवास मन्दिर सुल्तान टीपू के महल के निकट स्थित हैं जो उनकी उदारता का जीता–जागता प्रमाण है। भारत की अशिक्षा का लाभ उठाकर मुस्लिम विरोधी तत्वों ने इतिहास को तोड़ मोरोड़ कर पेश किया और हिन्दू–मुस्लिम सम्प्रदाय के बीच खाई चौड़ी करने के लिये सुल्तान टीपू की गलत छवि पेश की। आज भी अधिकतर स्कूल–कालेजों में यह पढ़ाया जाता है कि सुल्तान टीपू घोर हिन्दू विरोधी था।

सुल्तान टीपू का हिन्दुओं से कितना गहारा सम्बन्ध था उसका एक उदाहरण ये भी है कि सुल्तान टीपू ने यूरोपीय प्रभुत्व से केरल वासियों को छूटकारा दिलाने के लिये कई राज्यों पर आकृमण करके उन्हे पराजित किया, लेकिन जब उनका विजय रथ पोन्नांनी पहुँचा तो गुरू वामूर मन्दिर के निकट रूक गया। आक्रमण की आशंका से पुजारियों ने प्रतिमा को निकाल दिया था। सुल्तान टीपू ने न तो उसपर आक्रमण किया और न उनकी आस्था को चोट पहुँचाई बल्कि मन्दिर सम्पत्ति को कर मुक्त भी कर दिया। आज भी मन्दिर प्रबंध समिति एक विशेष आयोजन करके शेरे मैसूर का श्रद्धा मनाती है। उनके प्रति सम्मान व अभार प्रकट करने के लिये वह पकवान बनाती और बाँटती है जो सुल्तान टीपू को बहुत पसन्द थे। इस विशेष उत्सव का खर्च उस कोष से किया जाता है जो हिन्दू आस्था के प्रतीक गुरू वायूरप्पन के परम भक्तों को याद करने के लिये बनाया गया है।

सुल्तान टीपू शहीद रह0 का व्यक्तित्व किसी के प्रमाण का मोहताज नहीं है। ये तो इस छात्र की दिवानगी है कि उनसे जुडी जो भी छोटी–मोटी बातें जानता है बता देना चाहता है क्योंकि ये उन्हें अपना आदर्श मानता है। नहीं तो ऐसे महान लोग प्रमाण और प्रसंशा से बहुत बुलन्द होते हैं।

(लेखक नदवा के छात्र हैं)

❑❑

किस्त 10

हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण तथा अर्थ

— इदारा

नोट : बिन्दी वाले अक्षरों के उच्चारण स्थान, उर्दू वालों से सीखना आवश्यक है।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
तनासुब	अनुपात	तन्ज़ीम	संगठन	तवाज़ुअ़	नम्रता
तनासुख़	आवागमन	तन्ज़ीमी	संगठनात्मक	तवालुद	संतानोत्पत्ति
तनासुल	संतानोत्पत्ति	तनअ़्अुमी	ऐश्वर्य	तौअम	जुड़वां
तनाफ़ुर	घृणा	तन्क़ीह	स्वच्छता	तवाना	शक्तिशाली
तनाक़ुज़	पारस्परिक विरोध	तन्क़ीद	आलोचना	तौबः	पश्चाताप
तनावर	शक्तिशाली	तन्क़ीदी	आलोचनात्मक	तौबीख़	ताड़ना
तनब्बुह	चेतावनी	तन्क़ीस	अपमान	तौसीक़	पुष्टिकरण
तंबीह	चेतावनी	तन्क़ियह	शुद्धिकरण	तवज्जुह	ध्यान
तनख़्वाह	वेतन	तुनुकमिज़ाज	क्षुद्र स्वभाव	तौजीह	कारण
तुन्द	प्रचन्ड	तंग ख़याल	संकीर्ण दृष्टि	तौहीद	एकेश्वरवाद
तुन्दख़ू	प्रखर स्वभावी	तंगदस्ती	दीनता	तवस्सुत	मध्यस्थता
तन्दुरूस्त	स्वस्थ	तंगनज़र	संकीर्ण हृदय	तवस्सुल	माध्यम
तन्दुरूस्ती	स्वास्थ्य	तंगदिल	संकीर्ण हृदय	तौसीअ़	प्रसार
तुन्दमिज़ाज	प्रखर प्रकृति	तनव्वुअ़	विभिन्निता	तोशा	पाथेय
तनदिही	सचेष्ठता	तनोमन्द	हृष्टपुष्ट	तौसीफ़	स्तुति
तुन्दी	प्रखरता	तन्वीर	आलोक	तौज़ीह़	स्पष्टीकरण
तनज़्ज़ुल	पतन	तन्हा	अकेला	तौफ़ीक़	दैवयोग
तनज़ीह	निर्दोषता	तन्हाई	एकान्त	तवक़्क़ुफ़	विराम
तंज़ील	अवतरण	तवातुर	निरंतरता	तवक़्क़ुअ़	आशा
तंनसीख़	निरसन	तवाज़ुन	सन्तुलन	तौक़ीर	सम्मान

पाठक जिस उर्दू शब्द का अर्थ जानना चाहेंगे अर्थ सहित छापा जायेगा।

हज़रत हिन्दा बिन्त उत्बा (रजि0)

तालिब हाशमी

हजरत हिन्दा (रजि0) हिन्दा के नाम से मशहूर हैं। आप कुरैश के खानदान बनू अब्द शम्स से ताल्लुक रखती थीं। आपके पिता उत्बा बिन रबीअ् कुरैश के प्रतितिष्ठत लोगों मे से थे। आपका निकाह फाकिहा बिन मुगीरा मखजूमी से हुआ। लेकिन उनसे निभ न सकी, तो अबू सुफयान बिन हर्ब के निकाह में आयीं।

हिन्दा के पिता उत्बा बिन रबीअ् और पति अबू सुफयान दोनों इस्लाम के सख्त दुश्मन थे और वह खुद भी इस्लाम दुश्मनी में कम न थीं। सन 2 हिजरी में जंगे बद्र में हिन्दा के पिता उत्बा कुरैश के कई सरदारों के साथ मारा गया। मारे जाने वालों में अबू जह्ल भी शामिल था। उसके बाद मक्का के मुशरिकों की कमान अबू सुफयान ने संभाली। हिन्दा ने भी अपने पति का बढ़–चढ़कर साथ दिया। वह एक जोशीली वक्ता थीं। बाप की हत्या ने उसके भीतर प्रतिशोध की ज्वाला भड़का दी थी।

सन् 3 हिजरी में अबू सुफयान के नेतृत्व में मदीना पर हमला किया गया। इसी जंग को जंग उहुद कहते हैं। हिन्दा विशेष रूप से अपने पिता के कातिल हजरत हमजा (रजि0) से प्रतिशोध लेना चाहती थीं। इसके लिए जुबैर बिन मतअम के गुलाम वहशी को हजरत हमजा (रजि0) की हत्या के लिए तैयार किया। वहशी भाला फेंकने में बहुत माहिर था। वह घात लगाकर बैठ गया। जब हजरत हमजा (रजि0) उसकी जद में आये तो उसने अपना भाला फेंका जो हजरत हमजा (रजि0) के शरीर को पार कर गया।

कुफ़्फार की महिलाओं ने इस पर खुशी के गीत गाये। हिन्दा प्रतिशोध की ज्वालासे वशीभूत होकर हजरत हमजा (रजि0) का पेट चाक करके कलेजी निकाली और उसे चबाने लगी। अल्लाह के रसूल (सल्ल0) को इस दर्दनाक घटना से बहुत सदमा पहुंचा।

2

सन् 8 हिजरी में अल्लाह के रसूल (सल्ल0) ने मक्का पर विजय प्राप्त की और दस हजार सहाबियों के साथ शान से मक्के में दाखिल हुए। उस समय वहां ऐसी कोई शक्ति न थी जो अल्लाह के रसूल (सल्ल0) को प्रतिशोध लेने से रोक सकती। लेकिन रहमते–दोआलम (सल्ल0) ने अपने बदतरीन दुश्मनों को भी माफ कर दिया और यह घोषणा की कि जो व्यक्ति अबू सुफयान के घर में पनाह लेगा उससे भी कोई पूछ–ताछ न होगी। अबू सुफयान (रजि0) ने एक दो दिन पहले ही इस्लाम कबूल करने का एलान किया था।

हिन्दा पर भी इस्लाम की सदाकत खुल चुकी थी। इसलिए वह भी बुर्का पहनकर कुछ महिलाओं के साथ अल्लाह के रसूल (सल्ल0) की सेवा में हाजिर हुईं। इस अवसर पर आप (सल्ल0) से उनकी जो बातचीत हुई वह इस तरह थी :

हिन्दा : ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल0)! आप हमसे किन बातों पर बैअत लेते हैं?

आप (सल्ल0) : शिर्क न करो और अल्ला को एक मानो।

हिन्दा : यह अह्द आपने मर्दों से नहीं लिया फिर भी हमें स्वीकार है।

आप (सल्ल0) : चोरी न करो।

हिन्दा : मैं अपने पति की अनुमति के बिना कुछ खर्च कर डालती हूं, पता नहीं यह जायज है या नहीं।

आप (सल्ल0) : संतान की हत्या न करो।

हिन्दा : हमने तो अपने बच्चों को पाला था (यानी हत्या नहीं की थी) जब बड़े हुए तो आप (सल्ल0) ने उनकी हत्या कर डाली।

आप (सल्ल0) का दिल बहुत बड़ा था। हिन्दा ने यद्यपि आप (सल्ल0)के प्रिय चचा की कलेज चबा डाला था और इस अवसर पर भी गुसताखी के साथ बातचीत की थी लेकिन आप (सल्ल0) ने उसकी तमाम खताओं को माफ कर दिया।

हिन्दा को अपनी जान बख्शी की कोई उम्मीद न थी लेकिन जब अल्लाह के रसूल (सल्ल0) ने उन्हें माफ कर दिया तो उनके दिल की दुनिया पूरी तरह बदल गयी और वे सच्चे दिल से मुसलमान हो गयीं और अनायास ही बोल पड़ीं :

"ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल0)! इससे पहले आप (सल्ल0) से बढ़कर मेरा कोई दुश्मन न था लेकिन आज आप (सल्ल0) से ज्यादा कोई प्रिय और सम्मानित नहीं।"

3

इस्लाम स्वीकार करने के बाद हजरत हिन्दा (रजि0) की पूरी जिन्दगी इस्लाम की सेवा में लग गयी। हजरत उमर फ़ारूक़ (रजि0) की खिलाफत में वे अपने पति हजरत अबू सुफयान (रजि0) के साथ सीरिया जाने वाले मुजाहिदीन के लश्कर में शामिल हो गयीं। जिस जोशो–खरोश के साथ ये दोनों पति–पत्नी मुसलमानों के खिलाफ युद्ध किया करते थे उससे कई गुना अधिक जोश के साथ जिहाद में हिस्सा लिया और इस्लाम स्वीकार करने से पहले की इस्लाम दुश्मनी का कफ्फारा अदा करने में कोई कसर उठा न रखी।

सीरिया में जितनी भी जंगें हुई उसमें जंगे–यरमूक सबसे जबरदस्त जंग थी। रोम के कैसर ने अपनी पूरी ताकत जंग की आग में झोंक दी। कहते हैं कि रोमी सैनिकों की संख्या दस लाख तक थी जबकि इस्लाम मुजाहिदीन की तादाद तीस से चालीस हजार के बीच थी।

इस युद्ध में हजरत हिन्दा (रजि0) और उनके पति अबू सुफयान (रजि0) दोनों बड़े जोशो–खरोश के साथ शरीक हुए। लड़ाई में शत्रुओं का जबरदस्त दबाव था। मुसलमानों के कदम कई बार पीछे हटे लेकिन औरतों ने उन्हें गैरत दिलायी। हजरत हिन्दा (रजि0) भी जोश दिला रही थीं। यदि कोई मुसलमान लड़ाई से मुंह मोड़ कर पीठ फेरता तो उसके घोड़े के मुंह पर खेमे की चोब मार–मार कर गैरत दिलातीं कि जन्नत छोड़कर जहन्नम खरीदते हो और अपनी औरतों को रोमियों के हवाले करते हो।

यह हजरत हिन्दा (रजि0) और दूसरी महिलाओं की कोशिशें ही थी कि पीछे रहते मुसलमान पलट कर इस जोर से रोमियों पर हमला किया कि उनको काट कर रख दिया।

इस अवसर पर पीछे रहने वाले मुसलमानों में हजरत अबू सुफयान (रजि0) भी थे। हजरत हिन्दा (रजि0) ने उन्हें देख लिया। वे उनकी तरफ लपकीं और कहा–"खुदा की कसम, तुम दीने हक के विरोध में और खुदा के सच्चे रसूल (सल्ल0) के झुठलाने में बहुत सख्त थे आज मौकअ है कि दीने हक की सरबुलन्दी और अल्लाह के रसूल की खुशनूदी के लिए अपनी जान कुरबान कर दो और खुदा के सामने सुर्खरू हो जाओ।"

हजरत अबू सुफयान (रजि0) को गैरत आयी और वे पलट पड़े और टिड्ढी दल पर टूट पड़े। इसी जंग में एक और मौके पर रोमी सैनिक महिलाओं के टेंट के पास पहुंच गये। वहां मौजूद महिलाओं में हजरत उम्मे अबान (रजि0) उम्मे हकीम (रजि0), खौला (रजि0) और हिन्दा (रजि0) शामिल थीं। इन महिलाओं ने सैनिकों का मुकाबला किया यहां तक कि मुसलमानों की एक टुकरी मदद के लिए वहां पहुंच गयी।

हजरत हिन्दा (रजि0) की हजरत उस्मान गनी (रजि0) के दौरे खिलाफत में मृत्यु हुई। उनकी औलादों में अमीर मुआविया (रजि0) इस्लामी इतिहास के नामवर शख्सियत हैं।

इब्न असीर (रह0) ने लिखा है कि : हजरत हिन्दा (रजि0) एक खुद्दार, गैरतमन्द, अपना अलग विचार रखने वाली बुद्धिमान महिला थीं।

सही बुखारी की एक रिवायत से पता चलता है कि वे स्वभाव से बड़ी ही दानी थीं। वे शेरो–शायरी भी किया करती थीं। जंग–बद्र में अपने भाई अबू हुजैफा (रजि0) को शेअरों में बुरा भला कहा। उसी तरह जंगे–उहद में शेअर पढ़–पढ़कर कुरैशियों को उभारती थीं। लेकिन जब उनकी जिन्दगी में इन्किलाब आ गया तो अपने शेअरों से मुजाहिदीन को काफिरों के खिलाफ जोश दिलाती थीं।

इब्न हिशाम ने लिखा है कि हिजरते नबवी के बाद जब हजरत जैनब बिन्ते रसूल (सल्ल0) मक्का

शेष पृष्ठ 29 पर

हमारे हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की बरकतें

दाई हलीमा के घर

मौ0 मु0 राबे हसनी नदवी

हजरते हलीमा अपने शौहर के साथ और अपने एक छोटे बच्चे के साथ जो अभी दूध पीता बच्चा था कबीला बनू सअद बिन बक्र की औरतों के साथ दूध पीते बच्चों की तलाश में निकलीं, वह कहतीं हैं यह वाकिआ उस साल का था, जिस में बड़ी खुश्क साली थी और गुरबत थी, जिस की वजह से मेरे पास कुछ नहीं रह गया था। कहती हैं कि मैं अपनी गधी की सवारी (जो खाकी रंग की थी) पर निकली हमारे साथ एक बूढ़ी ऊंटनी भी थी जो थोड़ा दूध भी नहीं दे पाती थी, हम सारी रात अपंने उस बच्चे के साथ जो हमारे साथ था, सो नहीं पाते थे, वह भूख से रोया करता था, खुद मेरी छातियों में इतना दूध न था जो उस की जरूरत को पूरा करे न हमारी बूढ़ी ऊंटनी में दूध था कि जिस से उस को गिजा मिले, मगर हम उम्मीद करते थे कि मदद और कुशादगी हासिल होगी, चुनांचि मैं अपनी उसी गधी की सवारी पर निकली, अपनी सवारी की सुस्त रफ्तारी के सबब काफिले वालों को रास्ते में कई जगह इन्तिजार भी करवाया, यहां तक कि काफिले वालों को हमारी वजह से परेशानी हुई। हम मक्का पहुंच गये और दूध पीते बच्चों को तलाश करने लगे हम में से हर औरत को रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के यहां जाने का अवसर मिला और उन के सामने हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को पेश किया गया लेकिन जब उन्हें बताया जाता कि आप यतीम हैं तो वह पीछे हट जाती थीं। बात यह थी कि हम सब कुछ माली फाइदा चाहते थे जो बच्चे के बाप से मिल सकता था यतीम देख कर हम पीछे हट जाते कि बच्चे की मां और दादा से क्या उम्मीद की जाए। लेकिन जब सब औरतों ने कोई न कोई बच्चा हासिल कर लिया और मैं खाली हाथ रह गई तो मैं ने अपने शौहर से कहा कि मुझे अच्छा नहीं लगता कि मैं किसी बच्चे के बिना लौटूं मैं उस यतीम बच्चे ही को ले आती हूँ। उन्हों ने कहा कोई हरज नहीं उसी बच्चे को ले आओ चुनांचि मैं गई और आप को ले आई।

वह कहती हैं कि जब मैं उन को लेकर आई और अपनी गोद में लेकर दूध पिलाना चाहा तो मेरी छातियों में दूध आगया उन्हों ने सेर हो कर पिया बाकी से मेरे बच्चे ने भी सेर होकर पिया फिर दोनों सो गये जबकि इस से पहले अपने बच्चे के साथ सो नहीं पाते थे इस लिये कि वह भूख से रोता रहता था। फिर मेरा शौहर उस दुबली ऊंटनी के पास गया, उस के थन में दूध भरा हुआ था जिस को उन्हों ने दूहा खुद सेर हो रक पिया मैं ने भी सेर हो कर पिया और बहुत अच्छी रात गुजरी। सुब्ह को मेरे शौहर ने कहा : खुदा की कसम ऐ हलीमा तुम एक मुबारक बच्चा लेकर आई हो। मैं ने कहा खुदा की कसम मुझे इसी की उम्मीद है।

कहतीं है कि अब हम निकले और मैं अपनी उसी गधी की सवारी पर बैठी और उन को भी अपने साथ बिठाया, खुदा की कसम हम ने इस तरह तेजी से रास्ता तै करना शुरूअ किया कि हमारे साथ की औरतों की सवारियां उस तेजी से नहीं चल पा रही थीं, यहां तक कि मेरे साथ की औरतें कहने लगीं कि "ऐ अबू जुवेब की बेटी तेरा भला हो जरा हमारी खातिर रुक कर चलो, क्या यह तुम्हारी वही गधी नहीं है जिस पर तुम बैठ कर आई थीं, इस पर मैं ने उन से कहा, क्यों नहीं ब खुदा यह वही सवारी है। वह बोलीं खुदा की कसम इस की तो नई बात मअलूम होती है।

वह कहती हैं कि फिर अपने घरों में आ गये जो कबीला बनूसअद में थे। वहां की जमीन ऐसी जमीन थी कि मैं नहीं जानती कि कोई और दूसरी जमीन इस से जियादा खुश्क रही होगी लेकिन अब यह हाल हो गया कि मेरी बकरियां शाम को चर कर आतीं तो उन का पेट भरा होता और वह खूब दूध वाली हो गईं। हम दूध दूहते और पीते, जब कि दूसरों की बकरियों का वही हाल था, दुबली पतली दूध से खाली। मैं समझती थी कि यह सब उस बच्चे की बरकत थी, हम हर चीज में खैर व बरकत देखते रहे यहाँ तक कि दो साल पूरे हुए, और आप को आप की माँ के पास ले गई, लेकिन उन की खैर व बरकत से मुतअस्सिर हो कर माँ की मिन्नत समाजत कर के वापस लाई अब यह अपनी रजाई भाइयों के साथ बकरियां चराने जाने लगे, बक्रियां चराने ही में एक रोज दो सफेद पोशों ने आप का पेट चाक कर के सफाई की, यह दोनों सफेद पोश फिरिश्ते थे और यह "शक्के सद्र" का वाकिआ था, दाई हलीमा को जब इस की खबर हुई तो वह आप को आप की माँ के हवाले कर आईं।

हजरत आमिना ने पूछा क्यों वापस लाईं जब कि इस्रार कर के ले गई थीं तो आप ने शक्के सद्र का वाकिआ सुना कर कहा कि मुझे डर लगा कि कहीं कोई आसेब न हो।

हजरत आमिना ने फरमाया हरगिज नहीं खुदा की कसम शैतान इन तक नहीं पहुच सके गा यअनी कोई नुक्सान न पहुचा सकेगा। मेरे इस बेटे की बात ही और है। जब इन का हम्ल (गर्भ) मुझे हुआ तो मैं ने देखा कि मेरे अंदर से एक नूर निकला जिस से शाम के इलाके के शहर बसरा के महल रौशन हो गये, इन का हमल मेरे अन्दर हुआ तो इतना हल्का था कि इतना हल्का और आसान हम्ल कभी देखने में नहीं आया जब मैं ने इन को जना तो यह अपने हाथों को जमीन की ओर किये हुए थे और सर आसमान की ओर उठाए हुए थे। तुम छोड़ो इन को और खुशी खुशी वापिस जाओं।

❑❑

शेष पृष्ठ 27

हज़रत हिन्दा .....

से मदीना जाने के लिए अपना सामान बांध रही थीं तो हजरत हिन्दा (रजि0) उनके पास आयीं और कहा :

"ऐ मुहम्मद की बेटी! तुम अपने बाप के पास जा रही हो अगर रास्ते के लिए कुछ सामान आदि चाहिए तो बेझिझक मुझसे कहो। मैं उपलब्ध करा दूंगी।

इस रिवायत से पता चलता है कि इस्लाम से दुश्मनी के बावजूद उनमें रवादारी मौजूद थी। इस्लाम में आने के बाद उनके ये गुण उभर कर सामने आये और उन्होंने पिछली जिन्दगी की तलाफी अपने अच्छे आचारण के माध्यम से कर दी।

❑❑

शेष पृष्ठ 36

अंधविश्वास और.....

समाज–घातक ज्योतिष–फलित, तंत्र–मंत्र आदि के माध्यम से सौभाग्य प्राप्त करने, रोगों के निदान–उपचार की राह तलाशने की जिद्दोजेहद में हमारे राजनेता भी पीछे नहीं हैं, बल्कि कुछ तो स्कूली पाठ्यक्रमों में ज्योतिष–फलित, तंत्र–मंत्र रूपी अंधविश्वास को ढूंसने का प्रयास करते देखे गये हैं। ऐसे लोग समाज का क्या भला करेंगे जो मंत्री पद छिनने के बाद पूर्णकालिक तांत्रिक बन बैठे हैं।

गौरतलब है कि अमेरिका में विज्ञान की एक पाठ्य–पुस्तक में मानव शरीर को 'इंटेलिजेंट डिजाइन' लिखे जाने भर से राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक बहस शुरू हो गयी थी। प्रगतिशील विचारधारा के लोगों की दलील थी कि पाठ्य–पुस्तकों में धर्म को घुसेडा जा रहा है, यह जागरूकता की निशानी नहीं है। हमारे यहां तो राजनेता तक कहीं खुले में तो कहीं आड़ में धर्म और अंधविश्वास की रोटियां सेंक रहे हैं, जिससे संपूर्ण समाज और देश एक विस्फोटक स्थिति में पहुंच रहा है। ऐसे में जरूरी है कि सूचना के अधिकार की तरह ही अंधविश्वास निवारण नियम बने जिसके अंतर्गत अंधविश्वास को बढ़ावा देने वाले लोगों को त्वरित अदालतों के जरिये दंडित किया जा सके, जब तक विज्ञान आधारित शिक्षा का प्रकाश देश के कोने–कोने में नहीं फैल जाता, इस प्रकार के कड़े नियम देश के दुश्मन नम्बर एक की जड़ों पर सीधे चोट के लिए आवश्यक हैं।

❑❑

भारत का संक्षिप्त इतिहास

मुग़ल काल

– इदारा

जहीरूद्दीन मुहम्मद बाबर

प्रारम्भिक जीवन – बाबर तुर्की भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है–बाघ। अपनी वीरता तथा निर्भीकता के कारण ही वह इस नाम से पुकारा जाता था। उसका जन्म का नाम जहीरूद्दीन मुहम्मद था। उसका पिता उमर शेख मिर्जा, जो तैमूर का वंशज था, फरगना के एक छोटे से राज्य का शासक था जो उसे अपने पूर्वजों से मिला था। बाबर की माता मंगोल सरदार यूनुस खाँ की कन्या थी जो चंगेज खाँ का वंशज था। इस प्रकार बाबर की धमनियों में तुर्कों तथा मंगोलों, दोनों ही का रक्त प्रवाहित हो रहा था और इन दोनों ही वीर जातियों के गुण उसमें विद्यमान थे। उसमें तुर्कों की धीरता, वीरता तथा दृढ़ता के साथ–साथ मंगोलों की महत्त्वाकांक्षा तथा निष्ठरता भी विद्यमान थी। परन्तु बाबर बड़ा ही सभ्य तथा सुसंस्कृत व्यक्ति था।

बाबर की अवस्थापूरे बारह वर्ष की भी न हो पाई थी कि उसके पिता का परलोकवास हो गया और फरगना के छोटे से राज्य का शासन उसे संभालना पड़ा था। यद्यपि बाबर की अवस्था बहुत कम थी परन्तु अपने पिता के राज्य को संभालने की क्षमता उसमें विद्यमान थी। बाबर बाल्यकाल से ही बड़ा महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति था। अतएव अपने पिता से प्राप्त अपने छोटे से राज्य से वह सन्तुष्ट न रहा। फलतः वह अपने पूर्वजों के मध्य–एशिया के विशाल साम्राज्य का स्वामी बनने का स्वप्न देखने लगा। समरकन्दर अमीर तैमूर के साम्राज्य की राजधानी थी। अतएव बाबर की दृष्टि समरकन्द पर पड़ी और उसे जीतने का निश्चय कर लिया। यद्यपि बाबर दो बार समरकन्द पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने में सफल हो गया परन्तु अन्त में फरगना तथा समरकन्द दोनों से उसे हाथ धोना पड़ा। विवश होकर अफगानिस्तान चला आया और वहाँ पर अफगानों को परास्त कर उसने काबुल तथा कन्दहार पर अपना प्रभुत्व सथापित कर लिया और वहीं से भारत पर आक्रमण करने की योजनाएँ बनाने लगा।

बाबर के आक्रमण के समय भारत की दशा – जिन दिनों बाबर भारत पर आक्रमण करने की योजनाएं बना रहा था उन दिनों भारत की राजनीतिक दशा बड़ी ही शोचनीय हो रही थी और भारतीय परिस्थितियाँ बाबर के अनुकूल थीं। तैमूर के आक्रमण के उपरान्त दिल्ली सल्तनत को फिर अपना पुराना गौरव कभी न प्राप्त हो सका। उसकी सीमाएँ अत्यन्त संकीर्ण हो गई थीं। और महत्त्ववाकांक्षी सरदारों तथा अमीरों ने अपने स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लिये थे। इन दिनों दिल्ली में लोदी वंश शासन कर रहा था और इब्राहीम लोदी दिल्ली के सिंहासन पर आसीन था। उसके अमीर उससे अत्यन्त अप्रसन्न थे और उसके विरुद्ध विभिन्न प्राकर के षड्यन्त्र रच रहे थे और कुचक्र चलाया करते थे। इस प्रकार वह अपनी आन्तरिक समस्याओं के सुलझाने में लगा था और बाह्य आक्रमणों के रोकने की उसमें क्षमता न थी।

दिल्ली सल्तनत के पूर्व की सीमाएँ सुरक्षित न थीं। जौनपूर में शर्की सुल्तानों ने अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लिया था और दिल्ली सल्तनत के प्रतिद्वन्दी बन गये थे। उनकी दृष्टि सदैव दिल्ली के सिंहासन पर लगी रहती थी और वे उसे हड़पने के लिए अनुकूल परिस्थितियों की प्रतीक्षा कर रहे थे। बिहार में लोहानी अथवा नूहानी अफगानों ने अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लिया था और पूर्व की ओर से आपत्ति के कारण बन गये थे। हुसैन शाह तथा नुसरत शाह ने बंगाल में अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लिया था और दक्षिण बिहार पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने की योजनाएँ बना रहे थे। 1521 ई0 में नुसरत शाह ने अपनी सेनाओं के साथ बिहार में प्रवेश भी

कर लिया। उसने तिरहुत पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया और उपने राज्य की सीमा को मुंगेर तथा हाजीपुर तक बढ़ा लिया। यदि लोहानी लोग उसका विरोध न करते और उसकी प्रगति को रोकने में असमर्थ हो जाते तो जौनपुर तथा चुनार दोनों ही खतरे में पड़ जाते और यदि कहीं दुर्भाग्य से लोहानी लोग नुसरत शाह से मिल जाते और उसके साथ मैत्री कर लेते तो दिल्ली सल्तनत का सम्पूर्ण पूर्वी भाग खतरे में पड़ जाता जो अभी तक संगठित नहीं हो पाया था और जहाँ पर असंतोष की अग्नि सुलग रही थी। उड़ीसा में भी एक स्वतन्त्र राज्य की स्थापना हो गई थी परन्तु इसके शासकों की रुचि उत्तरी भारत की राजनीति में उतनी न थी जितनी दक्षिण भारत की राजनीति में थी।

दिल्ली सल्तनता के दक्षिण तथा दक्षिण–पश्चिम में तीन प्रमुख राज्य थे। पहला राज्य राजपूताने में राजपूतों का था। इन लोगों ने राणा साँगा के नेतृत्व में अपना एक प्रबल संघ बना लिया था। राणा साँगा बड़ा ही वीर योद्धा था और अनेक युद्धों में वह सफलता प्राप्त कर चुका था। वह राजस्थान के पूर्व में दिल्ली सल्तनत की ओर बढ़ने का प्रयत्न कर रहा था। राजपूताने के पड़ोस में मालवा तथा गुजरात में दो प्रबल मुसलमान राज्य थे। मालवा में महमूद द्वितीय और गुजरात में मुज्फ्फर शाह द्वितीय शासन कर रहा था। 1519 ई0 में राजा साँगा ने मालवा के शासक महमूद द्वितीय पर विजय प्राप्त कर ली और उसे कैद कर लिया। उसने मुबारिजुल को भी 1520 ई0 में परास्त कर दिया और अहमदनगर पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। इन विजयों के फलस्वरूप राणा साँगा गुजरात के शासक मुज्फ्फर शाह के संघर्ष में आ गया। दिल्ली की सल्तनत के लिए वह स्थिति बड़ी ही आपत्तिजनक थी। यदि राणा साँगा को मुजफ्फर शाह के विरुद्ध सफलता प्राप्त हो जाती तो उसकी विजयी सेना निश्चित रूप से राजपूताने के पूर्व की ओर बढ़ती और इस प्रकार दिल्ली सल्तनत के लिए भयानक संकट उपस्थित हो जाता और यदि राणा की पराजय हो जाती तो मुजफ्फर शाह के लिए दिल्ली जाने का मार्ग साफ हो जाता और दिल्ली का सुलतान बहुत बड़े संकट में पड़ जाता।

दिल्ली सल्तनत की पश्चिमी सीमा भी असुरक्षित थी। पंजाब में लोदी लोग बड़े शक्तिशाली हो गये थे। इन लोगों ने दौलत खाँ के नेतृत्व में अपने को संगठित कर लिया था। दौलत खाँ तातार खाँ का पुत्र था जो दिल्ली के सुल्तान सिकन्दर लोदी का घोर विरोधी था। दौलत खाँ लगभग बीस वर्षों से पंजाब में स्वतन्त्रतापूर्वक शासन कर रहा था। वह अपनी स्वतन्त्रता को सुरक्षित रखना चाहता था और इब्राहीम लोदी को किसी भी प्रकार की सहायता देने के लिये उद्यत न था। वासतव में वह बाबर तथा इब्राहीम लोदी दोनों ही को अपना शत्रु समझता था और उन्हें अपनी स्वतन्त्रता के लिए घातक समझता था। वह जानता था कि चक्की के दो पाटों के बीच में पड़कर वह कभी भी पिस सकता है। दौलत खाँ के साथ सुल्तान इब्राहीम लोदी का चाचा आलम खाँ लोदी पंजाब में विद्यमान था जो बहुत दिनों से आगरे पर अपनी दृष्टि लगाये था और इब्राहीम लोदी के विरुद्ध षड्यन्त्र रचा करता था।

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि "सोलहवीं शताब्दी के प्रारम्भ मे भारत राज्यों का एक संग्रह था और किसी भी आक्रमणकारी का जिसमें उसको विजय करने की शक्ति तथा दृढ़ता होती, शिकार बन सकता था।" इस प्रकार भारतीय परिस्थितियाँ ऐसी थीं कि बाबर का भारत पर आक्रमण करने के लिए आकृष्ट हो जाना स्वाभाविक ही था। भारतीय परिस्थितियों की अनुकूलता के अतिरिक्त उसके भारत पर आक्रमण करने के अन्य कारण भी थे।

बाबर के भारत पर आक्रमण करने के कारण– बाबर बाल्यकाल से ही बड़ा महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति था। वह अपने पूर्वजों तैमूर की भाँति एक विशाल साम्राज्य पर शासन करना चाहता था। पहले उसकी दृष्टि मध्य–एशिया पर पड़ी थी और वहीं का शासक बनने का उसने

प्रयत्न किया था। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए उसने कई बार समरकन्द पर आक्रमण किया था परन्तु अन्त में निराश हो गया और इस निराशा की पूर्ति उसने भारत पर आक्रमण करके करनी चाही।

तैमूर का वंशज होने के कारण बाबर अपने को पंजाब का अधिकारी समझता था। तैमूर ने जब भारत पर आक्रमण किया था तब उसने पंजाब के पश्चिमी भाग को अपने राज्य में मिला लिया था परन्तु बाद में अफगानों ने फिर उस पार अपना अधिकार जमा लिया था। अतएव बाबर पंजाब पर अपना पुश्तैनी दावा समझता था और उस पर अपना अधिकार जमाना चाहता था। भारतवर्ष अथवा उसके एक बहुत बड़े भाग को जीतकर बाबर अपने पूर्वजों के गौरव को प्राप्त करना चाहता था।

भारत पर आक्रमण करने का बाबर का आर्थिक उद्देश्य भी था। वह भारत की धन–सम्पन्नता से परिचित था। वह जानता था कि भारत पर विजय प्राप्त कर लेने से उसे अपार सम्पत्ति मिल जायेगी और इस धन से उसकी सभी आर्थिक समस्याओं का निराकरण हो जायेगा।

तत्कालीन परिस्थितियों से भी बाबर को भारत पर आक्रमण करने में बड़ा प्रोत्साहन मिला। बाबर इस बात को समझ गया था कि अफगानोंमें संगठन तथा एकता का बड़ा अभाव था और वे एक–दूसरे की जड़ खोदने में लगे हुऐ थे। वह यह भी जानता था कि राजा साँगा इब्राहीम लोदी का साथ न देगा क्योंकि इन दोनों में राजपूताना के पूर्वी प्रदेशों के लिए संघर्ष चलता रहता था।

परन्तु बाबर को भारत पर आक्रमण करने का सबसे अधिक प्रोत्साहन उस समय मिला जब लाहौर से अफगान अमीरों ने उसे भारत पर आक्रमण करने के लिए आमन्त्रित करने का निश्चय किया। इन अमीरों ने यह निश्चय किया कि आलम खाँ तथा दौलत खाँ के पुत्र दिलावर खाँ को बाबर के पास भेजा जाय और उस से यह निवेदन किया जाए कि इब्राहीम लोदी को दिल्ली के सिंहासन से हटाने और उस के स्थान पर आलम खाँ को सुल्तान बनाने में उनकी सहायता करे, क्योंकि इब्राहीम बड़ा ही क्रूर तथा निर्दयी शासक है। इससे बाबर को अफगानों की पारस्परिक फूट तथा उनकी दुर्बलता का पता लग गया और उसने भारत पर आक्रमण करने की तैयारियाँ आरम्भ कर दीं।

बाबर के भारतीय आक्रमण–

उधर बाबर भारत पर आक्रमण की तैयारियाँ कर रहा था इधर इब्राहीम लोदी का भी ध्यान पंजाब की ओर आकृष्ट हुआ। उसने एक सेना पंजाब भेज दी जिसने बड़ी आसानी से लाहौर पर अपना अधिकार जमा लिया परन्तु यह सफलता स्थायी न सिद्ध हुई। बाबर की सेना आगे बढ़ती गई और उसने लाहौर पर अपना अधिकार जमा लिया। अब बाबर की सेना लाहौर से आगे बढ़ी और 1524 ई0 में उसने दिपालपुर को जीत लिया और उस पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। चूंकि बाबर के साथी आगे बढ़ने के लिए तैयार न थे और उसे उजबेगों के विद्रोह की भी सूचना मिली, अतएव बाबर आगे न बढ़ा और वहीं से काबुल लौट गया।

बाबर के काबुल लौट जाने पर आलम खाँ ने दिल्ली पर आक्रमण कर दिया परन्तु इब्राहीम लोदी की सेना ने इन्हें मार भगाया। आलम खाँ तथा दिलावर खाँ बाबर के पास जा पहुँचे। दिसम्बर, 1525 ई0 में बाबर ने एक बार फिर विशाल सेना के साथ हिन्दुस्तान के लिए प्रस्थान कर दिया। अब की बार इसका उद्देश्य सम्भवतः पंजाब से आगे बढ़ना था। वह मार्ग में ही था कि उसे यह सूचना मिली कि दौलत खाँ लाहौर की और बढ़ रहा है। अतएव उसने अपनी चाल तेज कर दी और लाहौर पर एक बार फिर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। दौलत खाँ के साथी घबरा उठे और वे उसका साथ छोड़ने लगे। विवश होकर उसने आत्मसमर्पण कर दिया। पंजाब पर सरलता से अधिकार स्थापित हो जाने के कारण बाबर की प्रतिष्ठा तथा उसके उत्साह में बड़ी वृद्धि हो गई और दिल्ली के सुल्तान इब्राहीम लोदी से लोहा लेने के लिए वह आगे बढ़ा।

पानीपत का प्रथम युद्ध–

इब्राहीम लोदी भी युद्ध की

तैयारियाँ कर रहा था। एक विशाल सेना के साथ उसने भी दिल्ली से प्रस्थान कर दिया। बाबर भी अपनी सेना के साथ पानीपत के मैदान में आ डटा और शत्रु का सामना करने के लिए मोर्चेबंदी करने लगा। बाबर बड़ा ही कुशल तथा अनुभवी सेनानायक था। वह मंगोलों, उजबेगों तथा पारसीकों की रण–पद्धतियों से परिचित था। उसने अश्वारोहियों तथा तोपखाने के संयुक्त प्रयोग का निश्चय कर लिया। चूंकि बाबर की सेना इब्राहीम लोदी की सेना की अपेक्षा संख्या में केवल एक–चौथाई थी अतएव उसने सबसे पहले अपनी सेना की सुरक्षा की पूर्ण व्यवस्था की। अपनी सेना के एक पक्ष की सुरक्षा उसने पानीपत के नगर द्वारा की। दूसरे पक्ष की सुरक्षा उसने खाइयों, कटे हुए पेड़ों तथा कँटीली झाडियों द्वारा की, सामने सैकड़ों गाड़ियाँ खड़ी कर दीं जिन को उसने चमड़े की रस्यिों द्वारा एक–दूसरे से बधवा दिया। इसके पीछे उसने अपनी सेना रक्खी।

इब्राहीम लोदी भी अपनी विशाल सेना के साथ पानीपत के मैदान में आ डटा। उसके पास लगभग दो हजार हाथी थे। इन हाथियों को तोपखाने का सामना करने की शिक्षा नहीं दी गई थी। अतएव यह सम्भावना भी थी कि तोपखाने की आग से बिगड़कर यह अपने ही सैनिकों को रौंद डालें। एक सप्ताह तक दोनों सेनाएँ एक–दूसरे के सामने डटी रहीं परन्तु किसी को भी आक्रमण करने का साहस न हुआ। अन्त में इब्राहीम लोदी ने अपनी सेना को आक्रमण करने की आज्ञा दे दी। विशालता के कारण सेना का सुचारु रीति से संचालन न हो सका। बाबर की सेना ने इब्राहीम लोदी की सेना को चारों ओर से घेर लिया और उस पर तोपखानों तथा बाणों की वर्षा आरम्भ कर दी। इब्राहीम की सेना परास्त हो गई और लड़ाई के मैदान से भाग खड़ी हुई। इब्राहीम लोदी स्वयं लड़ता हुआ मारा गया। इस प्रकार बाबर को पानीपत के प्रथम युद्ध में विजयलक्ष्मी प्राप्त हो गई।

पानीपत के युद्ध में बाबर की विजय के कारण–

यद्यपि इब्राहीम लोदी की सेना बड़ी ही विशाल थी परन्तु बाबर ने अपनी छोटी–सी सेना की सहायता से उस पर विजय प्राप्त कर ली। इस विजय के निम्नलिखित कारण थे :–

(1) बाबर का कुशल सेनापतित्व– बाबर बड़ा ही कुशल तथा अनुभवी सेनापति था। युद्धों का उसे अत्यन्त व्यापक अनुभव तथा ज्ञान था और मंगोलों, उजबेगों आदि की भी रण–पद्धति को वह जानता था। वह अनेक युद्धों में सेना का संचालन स्वयं कर चुका था।

पानीपत के युद्ध के परिणाम– पानीपत का युद्ध भारत के निर्णयात्मक युद्धों में से है। यदि सम्पूर्ण भारत के भाग्य का नहीं तो कम से कम लोदी वंश के भाग्य का तो इसने निर्णय कर ही दिया। जिस दिन बाबर को पानीपत के युद्ध में विजय–लक्ष्मी प्राप्त हुई उसी दिन बाबर ने अपने पुत्र हुमायूं को आगरे पर और अपने दामाद मेंहदी ख्वाजा को दिल्ली पर अधिकार करने के लिए भेज दिया और उन पर बड़ी सरलता से उनका अधिकार स्थापित हो गया। 27 अप्रैल 1526 ई0 को शुक्रवार के दिन दिल्ली की मस्जिद में बाबर के नाम का खुतबा पढ़ा गया और गरीबों को दान–दक्षिणा दी गई। इस प्रकार बाबर दिल्ली का बादशाह बन गया परन्तु वह वहाँ अधिक दिन तक न रहा। वह दिल्ली से आगरे चला गया और वहीं पर सुल्तान अब्राहीम लोदी के राजमहल में निवास करने लगा। अब आगरा ही उसकी दलचस्पी का केन्द्र–बिन्दु बन गया।

पानीपत के युद्ध ने बाबर की भारतीय विजय की दूसरी कोटि का अन्त कर दिया। उसकी प्रथम कोटि का उस समय अन्त हुआ था जब उसने भारत के पश्चि–मोत्तर प्रदेश पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया था। इस युद्ध ने लोदी वंश के भाग्य का उसी प्रकार निर्णय कर दिया जिस प्रकार तैमूर के आक्रमण ने तुगलक वंश के भाग्य का निर्णय कर दिया था। अफगानों के नैतिक बल तथा उनके दुर्बल संगठन पर इस युद्ध का बड़ा घातक प्रभाव पड़ा न केवल सैनिक लोग वरन् साधारण जनता पर भी।

❑❑

? आपके प्रश्नों के उत्तर ?

- इदारा

प्रश्न : क्या गाय का पाख़ाना पेशाब पाक है?

उत्तर : ह़ज़रत अनस से रिवायत है कि उक्ल और उ़रैना (यह अ़रब के दो क़बीलों के नाम हैं) के चन्द लोग मदीना आए वह किसी बीमारी में मुबतला हो गये थे। नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने उन्हें ह़ुक्म दिया कि ऊंटों का दूध और पेशाब पियें। (बुख़ारी)

इस ह़दीस की बुन्याद पर इमाम मालिक, इमाम अह़मद, इब्राहिम, नख़ई जुहरी, इमाम मुह़म्मद ज़फ़र, इमाम इब्नि मुन्ज़िर (इन सब पर अल्लाह की रह़मत हो) वग़ैरह का मसलक है कि ह़लाल जानवरों का पाख़ाना पेशाब पाक है। अहले ह़दीस उलमा की भी यही राय है।

इमाम शाफ़ई के नज़दीक उक्ल और उ़रैना के लोगों को ह़ुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने ऊंटों का पेशाब पीने की इजाज़त दी थी वह इजाज़त उन्हीं के साथ ख़ास थी। लिहाज़ा उन के नज़दीक ह़लाल जानवरों का पाख़ाना पेशाब नापाक है। (अलफ़त्हुर्रब्बानी जि0:1 पेज:246)

इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़0) के नज़दीक ह़लाल जानवरों और छोटे परिन्दों का पेशाब व पाख़ाना नजासते ख़फ़ीफ़ा है। क्यों कि ऊपर की ह़दीस से मअ़लूम होता है कि ह़लाल जानवरों का पेशाब पाक है और दूसरी ह़दीस में है कि "हर पेशाब से पाकीज़गी ह़ासिल करो। (अल फ़िक़्ह़ अ़लल मज़ाहिब अलअरबआ़ जि0:1 पेज:26)

लेहाज़ा अह़नाफ़ गाय के पाख़ाना पेशाब को नजासते ख़फ़ीफ़ा समझें और कपड़े या जिस्म पर लग जाए तो धो कर पाक करें।

प्रश्न: नजासते ख़फ़ीफ़ कितनी मुआ़फ है?

उत्तर : अह़नाफ़ के नज़दीक नजासते ख़फ़ीफ़ा वह चीज है जिस का नजिस होना यक़ीनी न हो, किसी दलील से उस का नापाक होना मअ़लूम होता हो और किसी दलील से उस के पाक होने का शुब्हा होता हो, (मराक़िलफ़लाह)

लिहाज़ा ह़लाल जानवरों का पेशाब नीज़ घोड़े का पेशाब भी नजासते ख़फ़ीफ़ा हैं। इसी तरह़ ह़राम परिन्दे जो हवा में उड़ते हैं उन का पाख़ाना भी नजासते ख़फ़ीफ़ा है। ह़लाल परिन्दों में जिन का पाख़ाना बदबूदार हो नजासते ख़फ़ीफा है।

नजासते ख़फ़ीफा अगर जिस्म या कपड़े के किसी जुज़्व चौथाई पर लग जाए तो मुआ़फ़ होगी यअ़नी उस के साथ पढ़ी गई नमाज़ हो जाएगी।

अगर कपड़े में अ़ज़ा (भाग) न हों, जैसे पगड़ी, रूमाल, चादर दरी वग़ैरह तो कुल का चोथाई मुअ़तबर होगा, लेकिन अगर कपड़े में अजज़ा हों जैसे कुर्ता कि वह कली, आस्तीन, आगा पीछा मिला कर बना है तो उस के एक जुज़्व का चौथाई मुअ़तबर होगा, इसी तरह़ पाएजामे में पाइंचे का चोथाई मुअ़तबर होगा इसी तरह़ जिस्म के हर जुज़्व में जिस जुज़्व के चोथाई पर नजासते ख़फ़ीफ़ा लगी होगी मुआ़फ़ होगी लेकिन एक से ज़ियादा अजज़ा के चौथाई अ़ज्व की नजासते ख़फ़ीफ़ा मुआ़फ़ न होगी। वल्लाहु अअ़लम बिस्सवाब।

प्रश्न : ,हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने उ़रैना वालों को बीमारी में ऊंट का पेशाब पीने का ह़ुक्म दिया इस से यह समझा गया कि ऊंट का पेशाब पाक है तो क्या इस से यह नहीं निकलता कि हर पाक चीज़ खाई जा सकती है?

उत्तर : जो पाक चीजें इन्सान की ग़िज़ा हैं वह तो इन्सान खाता ही है लेकिन जो पाक चीजे इन्सान की गिजा नहीं है अगर वह किसी मरज़ की दवा हैं तो वह खाई जाएं गी। यही मअमूल है जैसे नीम की पत्ती, तुल्सी की पत्ती, मुलेठी, गुरच वगैरह दवा में खाते हैं।

प्रश्न : नजासते गलीज़ा किसे कहते हैं और वह कितनी

मुआफ़ है?

उत्तर : नजासते ग़लीज़ा वह है जिन का हुक्म सख़्त है, उन के नापाक होने में कोई शुब्हा नहीं होता। आदमी का पेशाब पाख़ाना, आदमियों और जानवरों का खून, मनी,शराब, तमाम पाख़ाने, बैल, भैंस, वग़ैरह का गोबर, बकरी और भेड़ की मेंगनी, घोड़े, गधे और बिल्ली का पाख़ाना यह सब नजासते ग़लीज़ा हैं। लेकिन इमाम अबू यूसुफ और इमाम मुहम्मद (रह0) हलाल जानवरों के पाख़ाने को नजासते ख़फ़ीफ़ा मानते हैं। यह दोनो इमाम अबू हनीफ़ा के शागिर्द हैं।

सुअर की हर चीज़ नजासते ग़लीज़ा है। तमाम हराम जानवरों का पेशाब नजासते गलीज़ा है। परिन्दों में न उड़ सकने वाले परिन्द मुर्गी, बतख़, शुतुर मुर्ग़ का पाख़ाना नजासते गलीजा है।

नजासते ग़लीज़ा अगर गाढ़े जिस्म वाली है तो एक दिर्हम यअनी लग भग 25 पैसे वाले सिक्के के वज़न के बराबर जिस्म या कपड़े पर लगी रह जाए और आप नमाज़ पढ़ें तो नमाज़ हो जाए गी इसी तरह बहने वाली नजासते गलीज़ा जैसे शराब या पेशाब जिस्म या कपड़े पर बड़े वाले एक रूपया के सिक्के के बराबर फैलाव में लगी हो तो मुआफ़ है नमाज़ हो जाए गी। लेकिन जहां तक हो सके नजासत पूरी तरह दूर कर के ही नमाज पढ़ें।

प्रश्न : हजरत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के चहल्लुम में तअज़िया रखना और नौहा व मातम करते हुए उस का जुलूस निकालना फिर तअज़िया दफ़न करना कैसा है?

उत्तर : बड़े अफ्सोस की बात है कि तअज़िया दारी के सिलसिले में हक़ बात अवाम को बुरी लगती है। सच यह है कि तअज़िया दारी को बरेली, देवबन्द, नदवा अहले हदीस सभी ने नाजाइज़ और हराम क़रार दिया है। फिर भी हमारे मुल्क में बे शुमार अहले सुन्नत तअजियादारी करते हैं जिस के कुछ वुजूह हैं

उलमाए बरेली किताबों में लिखते हैं और पूछने पर फ़त्वा देते हैं कि तअज़ियादारी नाजाइज़ है, बिदअते सय्यिअः है, लेकिन यह बात अपनी तक़रीरों में नहीं लाते ना ही अपने मानने वालों को रोकते हैं, बल्कि उन के बअज़ ग़ैर आलिम मुक़र्रिरीन जो धुंवा धार तक़रीरें करते हैं वह साफ़ कहते हैं कि तअज़ियादारी बुरी ज़रूर है मगर तअज़ियादारी छोड़ो गे तो तुम पर देवबन्दी वहाबियों का दाव चलने लगेगा। इस लिये इसे जारी रखो। इस तरह यह नाजाइज़ काम जारी है। काश कि उलमाए बरेली इस पर तवुज्जुह फ़रमाए।

दूसरे यह कि बे शुमार मुस्लिम अवाम मज़ारात के गददी नशीनों से जुड़े हुए हैं और मज़ारात वाले अम्र बिल मअ्रूफ़ और नही अनिल् मुनकर से अपने को दूर किये हुए हैं बल्कि मज़ारात वाले किसी फ़त्वे की परवाह किये बिना ख़ुद ही तअज़ियादार हैं।

तीसरी बात हज़राते शीआ के प्रोपैगन्डों से तआजियादारों के ज़िहन में यह बात बैठ गई है कि तअज़िया दारी का तर्क गोया हज़रते हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से नीज़ अहले बैत से अपने को अलग कर लेना है काश कि उलमा हज़रात अवाम की इस ग़लत फ़हमी को दूर कर पाते।

बहर हाल तअजियादारी नाजाइज़ है और अब 1400 सालों के बअ्द किसी वफ़ात पाए हुए के चहल्लुम मनाने की कोई गुंजाइश नहीं और इस सिसिले में तअज़िये के साथ हज़रते हुसैन का चहल्लुम मनाना हज़रते हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के नाना हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की शरीअत की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करना है अगर हज़रत हुसैन इस ज़माने में होते तो ऐसे तअजियादारों से जिहाद करते।

प्रश्न : क्या बैंक के सूद की रकम मस्जिद की तअ्मीर में ख़र्च की जा सकती है?

उत्तर : किसी भी सूद की रक़म से मस्जिद नहीं बनाई जा सकती। सूद लेना देना और सूद की रक़म अपने काम में लाना हराम है। बैंक से मिला हुआ सूद बहुत ग़रीब शख़्स को सवाब की नीयत के बिना दे दी जाए। आम लोगों के फ़ाइदे के काम में भी ख़र्च कर सकते हैं। जैसे सड़क बनाना, नल लगवाना आदि।

❑❑

अंधविश्वास और योग के झांसे

- प्रभु सोहाया

देश का सबसे बड़ा दुश्मन कौन है–इस प्रश्न पर अक्सर हमारा मीडिया चिंतन–मनन करता रहता है। इस बहस में भाग लेने वालों में से कोई चीन, कोई पाकिस्तान तो कोई देश में व्याप्त भ्रष्टाचार में इसकी आहट पाता है। पर समाज में गहराई से फैले अज्ञान और अंधविश्वास की ओर शायद ही किसी का ध्यान जाता है, जिसका लाभ धर्मों के ठेकेदार, तांत्रिक–ज्योतिष, झोलाछाप डॉक्टर, वैद्य–हकीम आदि खुलकर उठा रहे हैं।

मीडिया में विज्ञापनों के माध्यम से असाध्य रोगों के इलाज का दावा करने वाले हकीम, तांत्रिक–ज्योतिष और बाबा लोग भोली–भाली जनता को खुलकर लूट रहे हैं। देसी दवा उद्योग बिना किसी सरकारी रोक–टोक और जांच के संखिया और सीसा जैसे घातक जहर लोगों के शरीर में भरता जा रहा है जिसकी परिणति कैंसर और गुर्दे के खराब होने के बढ़ते प्रकरणों के रूप में देखी जा रही है। अमेरिका और अन्य विकसित देशों के खाद्य और दवा प्रशासन भारत में निर्मित कई देसी औषधियों को जांच के बाद प्रतिबंधित कर दिया है। पर भारत सरकार कुंभकर्णी निद्रा सोयी है।

इसी प्रकार टी0वी0 चैनलों पर छाये योग गुरुओं के झांसे में जनसाधारण यह विश्वास कर बैठा है कि विभिन्न उदर रोग, मधुमेह, हृदय रोग, एड्स, कैंसर आदि की चिकित्सा योग से संभव है। जबकि योग एक बेहतर व्यायाम के रूप में शरीर में रोगों के बैठने से पूर्व उनसे लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता विकसित करता है। पर चिकित्सा करने में लगभग असमर्थ ही साबित हुआ है। मसलन, शरीर में रोग की जड़ें जम जाने के बाद विज्ञान आधारित आधुनिक चिकित्सा प्रणाली से मुंह मोड़ कर योग की शरण में जाना बुद्धिमानी नहीं है। योग दर्शन के प्रतिपादक ऋषि पतजली के अनुसार योग में ध्यान का पक्ष सबसे सबल है। लेकिन ध्यान पर अधिक ध्यान देने के बजाय तथाकथित योग–गुरु आधुनिक चिकित्सा प्रणाली को गरियाने में अपनी सारी ऊर्जा खर्च कर रहे हैं।

ऐसे ही एक योग–गुरु की मौत भगंदर से होना और दूसरे का अपेंडिसाइटिस का ओपरेशन चुपके से कराना मीडिया की सुर्खियां बन चुका है। ऐसे में उम्मीद की किरण आधुनिक चिकित्सा–पद्धति में ही झलकती है। शेष लगभग मौत से गले मिलने तक मूर्ख बनाने की सच्चाई है। इस संबंध में मीडिया की भूमिका भी विचारणीय है।

एक हिन्दी दैनिक देश में सर्वाधिक बिक्री का दावा करता है, पर इसमें छपने वाली सामग्री के आधार पर इसे प्रांतीय स्तर का भी नहीं कहा जा सकता। कई जिलों–संभागों से प्रकाशित यह अखबार नगर विशेष की खबरों तक सीमित, चाटुकारिता से पूरिपूर्ण और अंधविश्वास को और मजबूत करने वाले घटिया विज्ञापनों से भरा होता है। संपूर्ण चिकित्सा जगत भ्रामक विज्ञापनों का घोर विरोधी है। विशेषज्ञों के अनुसार ऐसे विज्ञापन भोली–भाली जनता को मनोरोगी करने और लूटने का भयानक षड्यंत्र हैं।

इसी प्रकार काल सर्प, मंगल और पितृदोष निवारण कराने वाले विज्ञापनों के माध्यम से भी समाज को अपूरणीय क्षति पहुंचाई जा रही है। किसी परिवार या व्यक्ति के बुरे समय के लिए उनके दिवंगत मां–बाप को दोषी ठहराना कहां तक तर्कसंगत है,? जिन मां–बाप ने जीवन भर संघर्ष कर अपनी संतान के पालन–पोषण और शिक्षा–दीक्षा का कर्तव्य पालन किया, जीवन भर धर्म के मार्ग पर चले, परिवार और समाज के प्रति समर्पित जीवन जिया, उन्हें ज्येतिषियों के द्वारा प्रेत योनी को प्रापत बताकर संतानों कोबाधित करने का दोषी करार दिया जा रहा है।

सच तो यह है कि यह ज्योतिष–पंडित समुदाय दिवंगत मां–बाप के प्रति उनकी संतानों के मन में नफरत का जहर फैलाने का गुनाह कर रहा है।

शेष पृष्ठी 29 पर

न्यायपालिका लाचार

राष्ट्रीय सहारा से गृहीत

30 सितम्बर 2007 को कुल 2,89,86,205 मामले लंबित थे। इनमें से 37,00,223 मामले विभिन्न उच्च न्यायालयों में लंबित थे। उच्चतम न्यायालय में कुल लंबित केसों की संख्या 46,926 थी। मौजूदा रफ्तार से अगर मामलों का निस्तारण होता रहा तो सारे केस के निबटारे में 124 साल लगेंगे। अगर नए मामले रजिस्टर करने बंद भी कर दिए जाएं तो भी पहले से पेंडिंग मामले के निस्तारण में 25 साल लग जाएंगे।

2007 में लंबित मामलों के निस्तारण में 25 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई किन्तु नए मामले दर्ज होने की दर में 30 प्रतिशत बढ़ोत्तरी हुई। 2006 में उच्च न्यायालय के पास 16 लाख केस आए जबकि कुल 15 लाख केस निपटाए गए।

देश में अभी कुल चौहद हजार न्यायाधीश हैं। देश के सारे उच्च न्यायालयों द्वारा प्रतिदिन निबटाए गए केसों का राष्ट्रीय औसत 188 है। एक जज द्वारा प्रतिदिन केसों के निबटारे का सालाना औसत 2400 है। उच्च न्यायालय के एक जज द्वारा साल भर में निबटाए गए केसों का औसत केरल में 3103, मद्रास में 2979 कलकत्ता में 2919, पंजाब और हरियाणा में 2900 कर्नाटक में 2817 व आंध्र प्रदेश में 2625 है।

प्रति 10 लख व्यक्ति पर भारत में केवल 13.5 जज हैं जबकि अस्ट्रेलिया में यह संख्या 58, कनाडा में 75, ब्रिटेन में 51 और अमेरिका में 107 है।

भारत के कुल 21 उच्च न्यायालय प्रतिदिन 188 केस का निबटारा करते हैं मद्रास हाई कोर्ट प्रतिवर्ष 648 और इलाहाबाद हाई कोर्ट प्रतिवर्ष 445 केसों का निबटारा करता है।

सभी 21 उच्च न्यायालयों में न्यायधीशों के 284 पद खाली हैं।

सभी उच्च न्यायलयों में दस वर्षों से ज्यादा समय से लंबित केसों की संख्या 6 लाख 54 हजार 206 है।

देश भर में बलात्कार के लंबित मामलों की संख्या 58,310 हैं।

सुप्रीम कोर्ट में हर साल औसतन 42 हजार मामले दाखिल होते हैं जिनमें से 40 हजार 500 केसों का निबटारा होता है। हाई कोर्ट में करीब 12 लाख 41 हजार मामले आते हैं, जिनमें से करीब 11 लाख 23 हजार की सुनवाई हो जाती है। निचली अदालतों में एक करोड़ 42 लाख 29 हजार केस दायर होते हैं, जिनमें से एक करोड़ 32 लाख 22 हजार के करीब केसों का निबटारा होता है।

लंबित मामलों में कमी लाने के लिए 5067 ग्राम न्यायालय की स्थापना की जानी है। ये न्यायालय ग्रामीण जनता को सामान्य सिविल और दंडित मामलों में न्याय उपलब्ध कराएंगे। योजना के मुताबिक ये न्यायालय 90 दिनों के भीतर मामले की सुनवाई करेंगे।

औसतन देश के किसी भी क्रिमिनल केस का फैसला आने में औसतन 10 साल लगते हैं, जबकि सिविल केसों में यह अवधि दोगुनी होकर 20 साल हो जाती है।

इलाहाबाद उच्च न्यायालय में सबसे अधिक–आठ लाख 15 हजार मामले लंबित हैं। दूसरे व तीसरे स्थान पर क्रमशः मद्रास और बॉम्बे उच्च न्यायालय है जहां क्रमशः 4,66,495 मामले लंबित हैं। सबसे कम मामले 'केवल 51' सिक्किम उच्च नयायालय में लंबित हैं। निचली अदालत में लंबित मामले में उत्तरप्रदेश आगे है। यहां 46 लाख मामले लंबित हैं। दूसरे स्थान पर महारष्ट्र हैं जहां करीब 41 लाख मामले लंबित है।

राजधानी दिल्ली में भूमि अधिग्रहण से जुड़ा एक मामला दो सौ साल से विचाराधीन है।

निचली अदालतों में एक दिन में सौ–सौ केस लगे होते हैं।

❑❑

व्यंग्य

समाज सुधार

रिश्वतखोरी की खूबियां

- नुसरत जहीर

मुआफ कीजिए पाठको! क्रपशन का भूत अभी मेरे सर से उतरा नही है। सत्यम कम्प्यूटर के 7 हजार करोड़ रूपेय के घोटाले ने मुझे बुरी तरह हिला दिया है। मैं समझता था कि राजू लिंगम, सत्यम का पहला सच बोलने पर जेल चला गया है तो अब इस की कम्पनी भी दम तोड़ देगी, लेकिन सरकार ने आगे आकर कम्पनी को कन्धा दे दिया और इसे दोबारा इसके पाँव पर खड़ा करने की कोशिश में लग गयी तो मेरा यह विश्वास और पुख्ता हो गया कि बस यह झूठ, रिशवत, बेईमानी, क्रप्शन और घोटालों जैसे राष्ट्रीयगुण ही हैं जो आज हमारे देश को पूरी तरह जोड़े हुए हैं, वरना लोग यहाँ किसी अन्जान व्यक्ति के मुर्दे को कन्धा नहीं देते। सत्यम तो फिर एक मुर्दा कम्पनी है, जिसमें दोबारा जान फूँकने के लिए पूरी सरकार जुटी हुई है। यही कम्पनी अगर ईमानदारी के रास्ते पर चलती हुई होती तो मजाल है जो सरकार जरा सी भी सहायता करती, उल्टा उसके कार्यालयों में इनकमटैक्स के छापे डलवा दिये जाते, यह सोचते हुए कि अगर कम्पनी ने अभी तक कोई बेईमानी नहीं की है तो अवश्य ही इसमें कोई न कोई गड़बड़ है, जिसे तुरन्त दूर करना जरूरी है।

अब आप ही सोचिए यदि देश की तमाम प्राइवेट कम्पनियाँ ईमानदारी के रास्ते पर चल निकलें तो देश का क्या अन्जाम हो? दिन–रात इनकमटैक्स के छापे, सेबी में प्रतिदिन अफरा–तफरी, गल्ला के बाजार में आये दिन वस्तुओं के मूल्य ऊँचे–नीचे और न जोने क्या–क्या होने लगे। वह तो शुक्र अदा कीजिए देश के पूँजीपतियों का कि बेचारे दिन–रात मजदूरों का खून–पसीना एक करके सफेद दौलत कमाते हैं और फिर इस सफेद दौलत की बदौलत तरह–तरह के झूठ–सच का सहारा लेकर काले धन की फसलें उगाते हैं, बड़ी मेहनत से कम्पनियों के खातों में हेरा–फेरियाँ करते हैं और यूँ इनकमटैक्स वालों को प्रसन्न, सेन्सेक्स को मजबूत और आम जरूरत की चीजों के ऊँचे दाम बरकरार रखते हैं।

इसी प्रकार केवल रिशवत को ले लीजिए और कल्पना करके देखिए कि अगर जादू के डण्डे से आज प्यारे देश में रिशवतखोरी का रिवाज पूरी तरह समाप्त हो जाये तो क्या होगा? जादू के डण्डे की बात मैंने इसलिए कही कि किसी और डण्डे से तो रिशवत समाप्त होने से रही, चाहे वह किसी का भी डण्डा क्यों न हो, बस कल्पना ही की जा सकती है कि जादू के जोर से हर तरफ हर काम रिशवत के बिना होने लगा है और लोग ईमानदार हो गये हैं।

पुलिस वाले हर उस व्यक्ति को जो चेहरे से जरा भी परेशान नजर आ रहा हो, पकड़ कर थाने ले जाते हैं, स्वयं खड़े रहकर उसे कुर्सी पर बैठाते हैं, स्वयं प्यासे रहकर उसे रूह अफजा पिलाते हैं और फिर उसकी परेशानी का कारण जानते ही परेशनी के लिए जिम्मेदार व्यक्ति या संस्था के खिलाफ मुफ्त एफ आई आर दर्ज कर लेते हैं।

या आप देखते हैं कि ट्राँसपोर्ट अथार्टी में ड्राइविंग लाइसेंस लेने के लिए दाखिल होते ही चारो ओर से अफसरों के दलाल आकर आपको घेर लेते हैं, आप से गाड़ी चलवा कर देखते हैं, कोई गल्ती कर रहे हों तो उसे सुधारते हैं और अन्दर बैठे हुए अफसरान इन दलालों की गवाही पर किसी प्रकार की रिश्वत लिए बिना सरकारी फीस पर ड्राइविंग लाइसेंस जारी कर देते है। यही हाल सरकारी अस्पतालों, रेलवे स्टेशन और बिजली, पानी आदि की संस्थाओं में भी पैदा हो जाती है, सब काम रिशवत दिए बिना हो

जाते हैं तो जानते हैं, इस सब का कितना ख़मियाजा सरकार और जनता को भुगतना पड़ेगा?

पुलिस थानों में रिशवत समाप्त हो गई और पुलिस वाले इन्सान बन गये तो समझ लेजिए कानून का खुदा हाफिज है। अदालतों में जज और उनसे पहले वकील भूखों मर जायेंगे, जेलों में उल्लू बोलने लगेंगे थानों में पुलिस अमले को बोरियत से बचाने के लिए प्रतिदिन कव्वालियों, जिन्दा नाच गानों और कवि गोष्ठियों आदि का आयोजन कराना पड़ेगा। ट्रांसपोर्ट अथारटी में रिश्वतखोरी बन्द होने के परिणामस्वरूप ड्राइवरों की संख्या इतनी बढ़ जायेगी कि आम व्यक्ति के लिए जिन्दा सड़क पार करना दुशवार हो जायेगा। अस्पतालों में रिश्वत बन्द हो गई और डॉक्टरों में इन्सानियत जाग उठी तो वह हर रोगी को भरती करने लगेगें और फलतः पूरी नहीं तो आधी कौम जरूर अस्पताल में दाखिल हो जायेगी। रेलवे स्टेशन पर अमले की कर्तव्यनिष्ठा और रिशवत नाखोरी की बदौलत सबको टिकट मिलने लगे तो ट्रेनें इतनी कम पड़ जायेगी कि अधिकतर मुसाफिरों को टिकट लेकर पैदल ही रेलवे लाइन पर दौड़ना पड़ेगा। बिजली और पानी के मुहकमें भी इसी तरह काम करने लगे तो हर तरफ बिजली के कनेक्शन नजर आयेंगे। जैसे ही सबको बिजली देने की कोशिश की जायेगी, सारे ट्रांसफारमर भक से उड़ जायेगे और अगर लोड शेडिंग का सहारा लेकर सबको बिजली देने की कोशिश की गई तो बिजली कटौति का अन्तराल इतना लम्बा रखना पड़ेगा कि हर शहर से बलवे पथराव और आग लगाने की खबरें सुनने को मिलेगी और किसी शहर में सरकारी अमला इस आग को बुझाने की कोशिश करेगा तो इसे पानी नहीं मिलेगा, क्योंकि पानी के मुहकमे की ईमानदारी के कारण शहर के तमाम नलके पहले ही सूख चुके होंगे।

चलिए जादू के डण्डे की बात छोड़ दीजिए, मानलीजिए सरकार किसी कठोर कानून के जरिए रिश्वत और ब्लैकमेलिंग बंद करवा देती है, तब स्पष्ट है लोगों के दिल तो न बदलेंगे, इस सूरत में मुख्तलिफ हालात का सामना करना पड़ेगा मगर होंगे वह भी इससे ज्यादा कष्टदायक।

जरा गौर कीजिए, आज पुलिस थानों में रिशवत की सुविधा होने पर कुछ बेकसूरों को तो रिहाई मिल जाती है, अगर कठोर कानून की वजह से थानेदार रिशवत न ले सका तो वह किसी बेकसूर को क्यों छोड़ेगा? ट्राँसपोर्ट अथारटी में आज शान्तिपूर्वक रिशवतखोरी की बदौलत कुछ ड्राइवरों को तो लाइसंस मिलजाते हैं रिशवत की रिआयत न हो तो किसी को लाइसेंस न मिले और या तो सड़कें वीरान हो जायें या हर समय बिना ड्राइविंग लाइंसेंस के दुर्घटना होने लगे और हर सड़क पर मौत नाचती नजर आये। इसी प्रकार सरकारी अस्पतालों में कुछ गरीबों का तो मुफ्त इलाज हो जाता है, अगर कानून का डण्डा अमले को रिशवत लेने से रोक दे तो गरीब बेचारे प्राइवेट अस्पतालों में बलिबेदी पर चढ़ने पर मजबूर हो जायें। रेलवे स्टेशन टिकटों की ब्लैक रोक दी जाये तो आधी जनता यात्रा करना ही छोड़ दे और जहाँ है, वहीं पड़ी रहे। बिजली के मुहकमें को रिशवत की कमाई न मिले तो आज जिन घरों में थोड़ा सा उजाला है, वहाँ भी अंधेरा दिखाई देने लगे। पानी के मुहकमे में अगर रिशवत के स्रोत बन्द कर दिये जायें तो स्वयं आपके घर में ही सूखा पड़ जाये।

अतएंव स्पष्ट है कि बेईमानी, झूठ और कर्तव्यहीनता वह तत्व हैं जो देश और समाज में सन्तुलन बनाये रखे हुऐ हैं और रिशवतखोरी वह असम्भावित वरदान है जो इस जनता को चला रही है और देश को उन्नति के रास्ते पर ले जा रही है। कुछ बातों में हो सकता है आपको कुछ अतिशयोक्ति सी लोग, मगर हुजूर खैर मनाइये कि हक व ईमान हमारे समाजी थाने का दारोगा नहीं है। अगर होता तो आधी नहीं पूरी जनता हवालात में होती।

❑❑

जो बात अच्छी जानो उसे दूसरो को भी बताओ, कोई बुराई देखो तो उसे रोकने की कोशिश करो।

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

– डॉ0 मुइद अशरफ नदवी

अमरीका दुनिया के वसाएल (साधनों) पर कबजा करना चाहती है।

क्युबा के भूतपूर्व अध्यक्ष फीडरल कासत्रु ने कहा "अलकाइदा" एक बहाना

क्युबा के भूतपूर्व अध्यक्ष फीडरल कासत्रु का कहना है कि अमरीका "अलकाइदा" के नाम पर दुनिया के वसाएल (साधनों) पर कब्जा करना चाहता है, क्युबा की सरकारी वेबसाइट पर जारी एक मजमून (विषय) में उन्होंने कहा कि अमरीकी हुकूमत "अलकाइदा" का नाम इस्तेमाल करके अमरीकी शहरियों (नागरिकों) में खौफ दहशत फैला रही है।

उसका मकसद (उद्देश्य) दुनिया के वसाएल (साधनों) पर कबजा करने के मन्सूबो को पूरा करना है, अपने विषय में फीड्रल कास्त्रु ने लिखा है कि "अलकाएदा" अमरीका ही की पैदावार है, उनका कहना है कि इतिहास में असंख्य उदाहरण मौजूद हैं कि अमरीकी शासको ने हमेशा अपनी पब्लिक को बेवकूफ बनाकर उनमें विरोधियों के हवाले (संदर्भ) से खौफ पैदा किया फिर उस देश पर कब्जा कर लिया, उन्होंने लिखा है कि "नाइन इलेविन" से पहले ही अमरीका ने "अलकाइदा" को इस्तेमाल करने का मन्सूबा तय्यार कर रखा था।

ब्रिटेन में इस्लाम का बढ़ता हुवा प्रभाव

लन्दन– एक रेसर्च द्वारा यह बात सामने आई है कि ब्रिटेन के कलचर में इस्लाम का प्रभाव बहुत तेजी से बढ़ रहा है, मसजिद में जाने वाले मुसलमानों की संख्या चर्च जाने वाले रोम कैथोलिक्स लोगों की संख्या से दस वर्षों में अधिक हो जाएगी, रेसर्च में मुसलमानों की बढ़ती हुई संख्या पर चिन्ता प्रकट करते हुऐ चर्च पर जोर दिया गया है कि वह इस एताहासिक पतन को रोकने का प्रयत्न करें अनुमान के अनुकूल यदि यह प्रगति चलती रही तो कैथोलिक्स की सन्डे सरविस के लिये जाने वालों की संख्या 2020 ई0 में छः लाख 79 हजार हो जाएगी, भविष्यवाणी की गई है कि उस समय जुमअः पढ़ने वाले मुसलमानों की संख्या मध्य संख्या छः लाख 83 हजार हो जाएगी। रेसर्च में यह भी कहा गया है कि अगर चर्च ने आगे बढ़कर काम नही किया तो सन्डे सरविस के मुकाबिले में जुमअः की नमाज पढ़ने वालों की संख्या कई गुना अधिक हो जाएगी, यह खबरें ऐसी सूरत में सामने आ रही है जब ब्रिटिश समाज में मुसलमानों के बारे में तनाव पैदा करने की कोशिश की जा रही है।

मअलूम होना चाहिये कि अमरीका और दूसरे पच्छिमी देश इस्लाम के खिलाफ जितना प्रौपैगन्डा कर रहे है उतना ही इस्लाम के कुबूल करने वालों की संख्या में इजाफा हो रहा है, क्यों कि प्रोपैगन्डे के बअद लोग इस्लाम के पढ़ने और समझने में आगे बढ़ रहें हैं और हकीकत (वास्तविकता) जानने के बअद इस्लाम अपना रहे हैं।

❑❑

अलगववादियों को कश्मीर समस्या के समाधान की उम्मीद

अमेरिकी राष्ट्रपति के रूप में बराक ओबामा के चुने जाने से कश्मीर के अलगाववादियों को इस बात की उम्मीद जागी है कि दशकों पुरानी कश्मीर समस्या का जल्द ही कोई समाधान निकल आएगा। हुर्रियत कान्फ्रेंस के उदारवादी धड़े के अध्यक्ष मीरवाइज उमर फारूक ने कहा, 'हम उम्मीद करते हे कि ओबामा चुनाव अभियान के दौरान कश्मीर समस्या के समाधान के संबंध में दिये गए अपने उत्साहवर्द्धक बयान को अमली जामा पहनाए गें।

❑❑